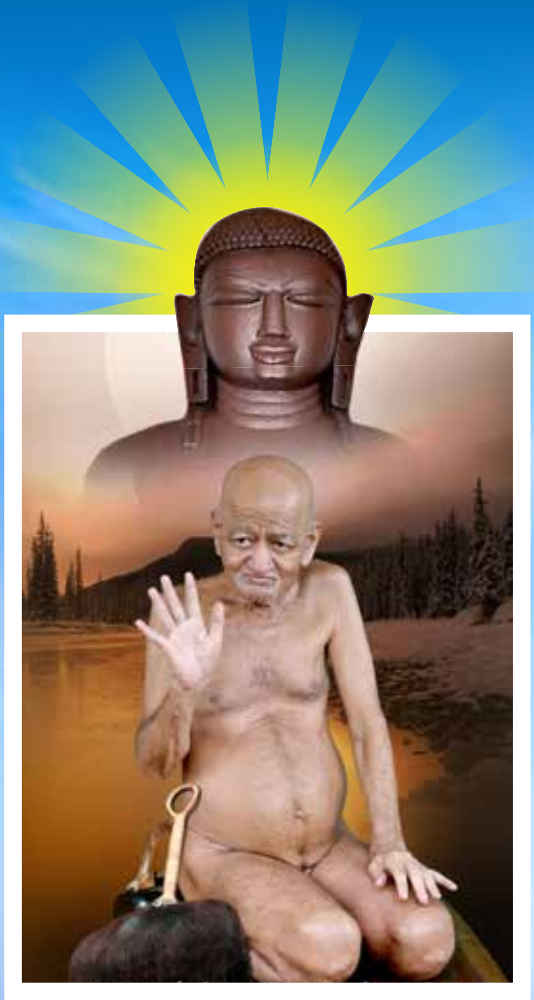

श्री सम्मेद शिखरजी भाव वंदना

सम्मेद शिखर जी की भाव वंदना

तीर्थंकर	शरीर वर्ण	अवगाहना (धनुष्य)	वैराग्य कारण	केवल वृक्ष	चिन्ह	सहमुक्त	मोक्षस्थल / कूट	याद करने के लिये कुछ उपाय
1. श्री वृषभनाथ	सुवर्ण	500	नीलांजनामरण	न्यग्रोध (वट)*	बैल	10,000	10 कैलाशपर्वत	(अष्टापदजी)
2. श्री अजितनाथ	सुवर्ण	450	उल्कापात	सप्तपर्ण	हाथी	1000	22 सिद्धवरकूट	यहा से सिद्ध होनेवाले प्रथम तीर्थंकर
3 श्री संभवनाथ	सुवर्ण	400	मेघविनाश	शाल	घोडा	1000	13 धवलकूट	←कूटपर धवल / श्वेतचरण
4 श्री अभिनंदन	सुवर्ण	350	गंधर्वनगरनाश	सरल	वानर	1000	15 आनंदकूट	चिन्ह बंदर पाते आनंद अपार
5 श्री सुमतिनाथ	सुवर्ण	300	जातिस्मरण	प्रिंयगु	चकवा	1000	17 अविचलकूट	सु-मति से मन अविचल होता
6 श्री पद्मप्रभु	लाल	250	जातिस्मरण	प्रिंयगु	कमल	324	7 मोहनकूट	म्हारा पद्म प्रभु की मोहिनी मूरत
7 श्री सुपार्श्वनाथ	हरित	200	वनविनाश	शिरीष	स्वस्तिक	500	20 प्रभाषकूट	शरीर केहरितवर्ण की प्रभासे युक्त
8 श्री चंद्रप्रभु	श्वेतवर्ण	150	अध्रुवादिभावना	नाग	चंद्र	1000	9 ललितकूट	उँची टोंक से ललित / सुंदर नजरा
9 श्री पुष्पदंत	श्वतवर्ण	100	उल्कापात	बहेडा	मगर	1000	6 सुप्रभकूट	इस कूट से तारे दर्शन होते - सुप्रभा
10 श्री शीतलनाथ	सुवर्ण	90	हिमनाश	धुलीपलाश	श्रीवृक्ष	1000	11 विद्युतवरकूट	←शीतल जल से विद्युत निर्माण
11 श्री श्रेयांसनाथ	सुवर्ण	80	वनविनाश	तेंदू	गेंडा	1000	5 संकुलकूट	श्रीयस (बेहेतर) कुल से - सं-कुल
12 श्री वासुपूज्य	लाल	70	जातिस्मरण	पाटल (कदंब)*	महीष	601	10 चंपापूरी	(मंदारगिरी)
13 श्री विमलनाथ	सुवर्ण	60	मेघनाश	जम्बू	शूकर	600	21 सुवीरकूट	←विमलनाथजी - सु'वी'र
14 श्री अनंतनाथ	सुवर्ण	50	उल्कापात	पीपल	सायाळा	7000	12 स्वयंभुकूट	अनंतगुणधारी जो प्रकृतिक / स्वयंभु है
15 श्री धर्मनाथ	सुवर्ण	45	उल्कापात	दधिपर्ण	वज्र	801	16 सुदतवर कूट	सदासुख (सु) देनेवाला (दत्त) = धर्म
16 श्री शांतिनाथ	सुवर्ण	40	जातिस्मरण	नंदी	हरिण	900	18 कुंदप्रभकूट	शांतिनाथजी के बाद कुंथु नाथ - कुंदप्रभ
17 श्री कुंथुनाथ	सुवर्ण	35	जातिस्मरण	तिलक	बकरा	1000	9 ज्ञानधरकूट	ज्ञान सबसे पहेल - प्रथम कूट
18 श्री अमरनाथ	सुवर्ण	30	मेघविनाश	आम्र	मीन	1000	3 नाटककूट	(अरि) शत्रु में न अटक - नाटक
19 श्री मल्लिनाथ	सुवर्ण	25	अध्रुवादिभावना	अशोक	कुंभ	500	44 संवलकुट	मल्लिनाथजी - संवलदाता
20 श्री मुनिसुव्रत	नील / श्याम	20	जातिस्मरण	चंपक	कासव	1000	8 निर्जरकूट	यहा से सर्वाधिक मुनि मोक्ष गये ↑निर्जरा
21 श्री नमिनाथ	सुवर्ण	15	जातिस्मरण	बकुल	नीलकमल	1000	2 मित्रधरकूट	←नमिनाथ - मित्रधर
22 श्री नेमिनाथ	नील / श्यम	10	जातिस्मरण	मेषश्रृंग (बाँस)*	शंख	536	23 गिरनार	←(ऊर्जयंत पर्वत)
23 श्री पार्श्वनाथ	हरित	9 हाथ	जातिस्मरण	धव	सर्प	36	24 स्वर्णभद्रकूट	लोहे के स्वर्ण बनानेवाला पारसमणी
24 श्री महावीर	सुवर्ण	7 हाथ	जातिस्मरण	शाल	सिंह	एकाकी	17 पावापुर	(पद्मसरोवर)

हुंडावसर्पिणी कालदोष से
1-12-22-24 वे भगवान
सं. शिखरजी से मोक्ष नहीं गये

*3 पद्मासन में
बाकी 21 खड़्गासन

7 श्वेतवर्ण चरण
17 श्यामवर्ण चरण

लेखिका
श्रीमती पंकज विशाला, दिल्ली

विशेष सहयोग
राजकुमार जैन, बिलासपुर

सहयोग : व्रती श्राविका,
डॉ. मोनिका सुहास शहा, मुम्बई

हार्दिक मंगल भावना

आर्यिका श्री 105 गुरुमति माता जी

पूजनीया श्री दृढ़मति माताजी ससंघ

परम पूजनीया आर्यिका रत्न 105 श्री पावनमति माताजी

जिस प्रकार व्हाट्सएप ग्रुप पर, 3,500 सदस्यों के साथ यह भाव वन्दना सानन्द सम्पन्न हुई, उसी प्रकार, शाश्वत सिद्धक्षेत्र, पर्वतराज श्रीसम्मेद शिखर जी की साक्षात वन्दना, आचार्य भगवन्त की परम आज्ञानुवर्ती शिष्या, पूजनीया श्री दृढ़मति माताजी ससंघ व आचार्य भगवन्त से दीक्षित जितनी भी आर्यिका माताजी जो अभी तक इस पर्वतराज की अन्यान्य कारणों से साक्षात् वन्दना करने से वंचित रह गयी हैं (जिन्होंने पूर्व में कभी भी इस पर्वतराज की साक्षात वंदना नही की) ऐसी सभी आर्यिका माताजी के सान्निध्य में , साक्षात वन्दना करने का परम सौभाग्य हमें मिले!

आचार्य भगवन्त से करबद्ध अनुनय विनय करते हैं कि हे पूज्य गुरुवर !!! हमें यह परम सौभाग्य प्रदान कर अनुगृहीत करें कि हम सिद्धक्षेत्र श्री कुण्डलपुर जी से शाश्वत सिद्धक्षेत्र श्री सम्मेद शिखर जी तक की इस ऐतिहासिक यात्रा का /पड़ाव को अपनी महती जिम्मेदारी पूर्वक पूर्ण करते हुये पूजनीया श्री दृढ़मति माताजी ससंघ सहित इस यात्रा के पथिक बनकर अपना सौभाग्य अर्जित कर असीम पुण्य के भागी बनें।

वैशाली जैन

- धर्मपत्नी श्री पंकज जैन, दिल्ली
पारस चैनल,चेयरमैन

मनोभाव

सम्मेद शिखर जी की भाव वंदना, लिखने का कभी मेरे मानस में विचार नही आया। शाश्वत सिद्ध क्षेत्र की महिमा पर कलम चलाना मेरे लिए एक स्वप्न के समान था। आध्यात्मिक जीवन को ऊंचा उठाने के लिए अध्यात्म विज्ञान पढ़ा जाना चाहिए। [एतदर्थ: शाश्वत सिद्धक्षेत्र की भाव वन्दना, यह विज्ञान जीवन को मृत्यु से अमरत्व, अंधकार से ज्योति, और असत् से सत् की ओर ले जाता है। उस हेतु हमें वन्दना पथ, उसमें पड़ने वाले पड़ावों की विस्तृत जानकारी हो तो वन्दना का आनन्द और सिद्धि अनेक गुना हो जाती हैं।

शब्दों की जादूगरी में मैं नितान्त अनभिज्ञ / अनुभवहीन हूँ। फिर भी मुझे यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि प्रस्तुत कृति हमारी वन्दना पथ में, हम अल्पज्ञों को न केवल संजीवनी सिद्ध होगी वरन अमृतपान कराने के समान वन्दना के सोहार्द को अनुभव में लाने में कार्यकारी होगी।

यह हृदयस्पर्शी कृति आपके नित्य स्वाध्याय की वस्तु भी हो सकने में समर्थ है।दैनन्दिन रूप से।की गई यह भाव - वन्दना एक सुधि श्रावक के लिए उसकी प्रतिदिन की सामायिक भी सिद्ध होगी। आप जीवन में इसे नित्य सामायिक रूप भी शामिल कर जीवन के सुफल को प्राप्त सकते हैं। आप सबको इसे पढ़कर भाव - वन्दना कर आत्मिक तोष और आनन्दानुभूति होगी ऐसी मेरी मान्यता है। हमने भाव वन्दना कराने में शब्दों / विषय संयोजना में वे सभी आवश्यक तत्त्व समाहित करने का भरसक प्रयास किया है जिससे आपको वन्दना बोझिल न लगे और उत्सुकता का अंश अन्त तक बना रहे। इस भाव वन्दना को अत्यन्त सरल, सुगम्य, सुबोध रखने में हमने पूर्ण प्रयास किया है।

यह भी प्रयास किया है

यह कृति आप सभी के मानस मन्दिर में अपना स्थान बनाकर आपको भाव वन्दना का अधिकतम लाभ प्रदान करने में सक्षम सिद्ध हो यही भावना है।भाव वन्दना ही साक्षात वन्दना का कारण होती है। इसी पहलू को हमने ध्यान में रखकर यह भाव वन्दना को शब्दों के सुसंयोजन से पूर्ण किया हैं।

*प्रबल निमित

अभी पिछले डेढ़ वर्ष पहले, मेरे श्रीमान जी (श्री पंकज जी)को कोविड हुआ तो उनके साथ मुझे भी हास्पिटल जाने का सुअवसर मिला जो मेरे लिये वरदान सिद्ध हो गया। मेरे श्री मान जी का स्वास्थय लाभ नही मिल रहा था। मन में सकारात्मक विचार बनाये रखने का सशक्त माध्यम खोज रही थी आचार्य भगवंत का ध्यान लगाया तो सहसा भाव सम्मेद शिखर जी की वंदना, पंकज जी के सहित करने के हुये। और मैने सम्मेद शिखर जी की भाव वंदना करने का मानस बनाया क्योंकि लम्बी वन्दना होगी और मन को कही भटकने का समय ही नही मिलेगा। अन्तस में सकारात्मकता बनी रहेगी। भले ही रिजल्ट जो भी होगा।आयुकर्म तो किसी का हम घटा या बढा नही सकते मगर यात्रा को अंतिम लक्ष्य (धर्म ध्यान)के साथ संपन्न तो करा ही सकते हैं। मैं अत्यन्त आभारी हू श्री राजकुमार जैन बिलासपुर (ज्योतिर्मय) का।मुझे वहाँ हास्पिटल में सम्मेद शिखर जी की कूट व चरण के विषय में कुछ जानकारी नहीं थी। हालांकि वहाँ मैने रोजाना राजकुमार भईया से एक घण्टे की क्लास ली। भईया से कूटों के क्रम व चरणों के वर्ण की डिटेल ली।

उनको रटा।

मेरे पास न कोई डायरी थी और न ही कोई सम्मेद शिखर जी की पुस्तक। केवल एकमात्र हास्पिटल का prescription कार्ड था। उसी पर कूटों के क्रम व चरणों के वर्ण लिखे। और फिर तसल्ली नहीं हुई तो याद करने के लिये एक पैटर्न बनाया। फिर कूटों के नाम के लिये भी पैटर्न बनाया। वहाँ बैठकर रोजाना दो - दो भाव वंदना सम्मेद शिखर जी की। मैंने श्री सम्मेद शिखर जी की साक्षात वंदना, पूर्व में लगभग 14–15 बार तक की हुई हैं। मगर किसी कूट का क्रम, चरणों के वर्ण, कूट की विशेषता यह सब जानकारी के विषय में - सब शून्य। मुझे ललक उठी हास्पिटल में तो राजकुमार भईया से किसी न किसी कूट की विशेषतायें पूछती गई। और हास्पिटल में मुझे सम्मेद शिखर जी भाव वंदना की जो अमूल्य निधि (उपलब्धि) मिली उसका मै शब्दों में वर्णन नहीं कर सकती। मै राजकुमार भईया का ह्दय की गहराई से आभार प्रकट करती हूं। मैंने सम्मेद शिखर जी के महत्व को जाना। वास्तव में यह भाव वंदना, कहने को भाव वंदना थी, मगर मेरे लिये साक्षात वंदना से भी बढकर थी। मैने कभी साक्षात वंदना में भी इतना आनंद अनुभूत नही किया जितना भाव वंदना में किया।

फिर मुझे महसूस हुआ कि इस वंदना में इतना आनंद है तो इसे सभी के साथ साझा करना चाहिये। मैंने पैटर्न बनाया। चरणों के वर्ण का, कूटों के क्रम का, कूटों के नाम कंठस्थ करने। का पैटर्न बनाया। हर कूट के लिये पोस्ट बनाई। मैंने *सम्मेद शिखर महात्मय * कृति का सहारा लिया। कोविड की दूसरी लहर पूरे जोरो पर थी। हर कूट पर अलग अलग पोस्ट लिखी* और हर पोस्ट को*राजकुमार भईया से चैक करवाया। वटस्अप पर ग्रुप बनाये। 15 वटस्अप ग्रुपो यानि 3,500 श्र्ब्द्धालु श्रावक उन ग्रुपो पर जुड़े। वहाँ उन सभी सदस्यों के साथ, रोजाना एक —एक कूट की वंदना, तारीख के हिसाब से व उस दिन उन्ही तीर्थंकर की जाप कराई।

युवा वर्ग हो चाहे बाल वर्ग, सभी ने बहुत ही उत्साह पूर्वक इस भाव वंदना को किया। कूटो के नाम कंठस्थ करके लगभग 350 सदस्यो ने वीड़ियो बनाकर, सबूत के तौर पर भेजी। मेरे ह्दय रोमांचित हो उठा जब नन्हे नन्हे बाल गोपाल ने भी इस यात्रा में सम्मिलित होकर,सभी कूटो के नाम कंठस्थ करके वीडियो बनाकर भेजी। केवल स्वदेश से ही नही,वरन विदेश से भी लगभग। चौबीस भक्तजनो ने इस भाव वंदना में अपनी उपस्थिति दर्ज की। यहॉं तक कि विदेश में प्रवास कर रहे चार श्रद्धालुओं ने भी कंठस्थ करके वीड़ियो बनाकर भेजी।

इस वंदना में केवल सामान्य यात्री ही नहीं अपितु बहुत से सम्मानीय श्रेष्ठी जन व विद्वान और बहुत से बुजुर्ग, बच्चे व महिलाएँ सभी वर्ग के शामिल थे। मेरे भाव हुये कि इस वंदना को और सुगम बनाया जाये मगर मुझे ड्राइंग (चित्रकारी) बिल्कुल नहीं आती।

मैंने परम आदरणीय डाक्टर मोनिका भाभी जी , जो इस भाव वंदना में सम्मिलित थी, मेंने उन से इस भाव वंदना को साकार रुप देने के लिये नक्शे के रुप में अंकित करने की भावना रखी। जो उन्होने सहर्ष स्वीकार कर ली। और हमारी इस भाव वंदना को चित्र के रुप में उकेरा व इसे जीवंत रुप दिया। मै ह्दय के अंतरंग भावो से, परम आदरणीय डाक्टर मोनिका शहा भाभी जी का आभार प्रकट करती हूं। श्री राजकुमार भईया बिलासपुर (ज्योतिर्मय)का ह्रदय की गहराईयों से आभार प्रकट करती हूं।

वैशाली जैन

- धर्मपत्नी श्री पंकज जैन, दिल्ली

पारस चैनल,चेयरमैन

स ब प्राणियोंमें मात्र मनुष्य की यह विशेषता है कि वह जीना ही नहीं चाहता , जानना भी चाहता है। मनुष्य की इसी विशेषता को लेखिका ने अपने मानस केन्द्र में रखकर लेखिका ने प्रस्तुत इस कृति का सृजन किया है। प्रतिवर्ष इस शाश्वत् सिद्धक्षेत्र पर लाखों श्रद्धालु दर्शनार्थी श्री सम्मेदशिखर जी की वन्दना हेतु आते हैं। परन्तु उन्हें इस पर्वत पर स्थापित कूटों और उनसे सम्बन्धित जानकारी के बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं होता।अगर जानकारी होती भी है तो सतही। गहराई से ज्ञान नहीं होता।

विद्वान / संवेदनशील / धर्मप्रधान चित्त की चित्तवृत्ति से अभिप्रेत लेखिका ने इस कमी को बारीकी से जाना -समझा।

वन्दनार्थियों की वन्दना

को और अधिक सार्थक / रोचक / फलदायी बनाने हेतु उन्होंने इस कृति में अब तक अनुपलब्ध अनेक छोटी- छोटी व नवीन जानकरियाँ हम सबको देकर एक महान कार्य किया है। जिस क्षेत्र पर हम वन्दनार्थ जाते हैं वहाँ की अगर सम्पूर्ण जानकारी हमें हो तो यकीनन हमारे भाव भी अधिक लगेंगे और हमारा उस क्षेत्र से जुड़ाव भी अधिक यथार्थता लिए होगा।

कृतिकार ने बहुत सूक्ष्मता से सम्पूर्ण वन्दना के हार्द को माने खोलकर ही रख दिया है। **शब्दों की इयत्ता से अधिक सूचकता की ओर उनका संकेत रहा है। इतस्तत: भटकने देने की बजाय उन्होंने अपने विचारों को केन्द्रित रखकर सम्पूर्ण जानकारी अत्यधिक कुशलता से परोसी है।**

उनका बहुत बहुत साधुवाद ।

अपने कुशल विवेचन और सम्पूर्ण वन्दना और वन्दना क्रम को कण्ठस्थ / हृदयंगम करने हेतु कृतिकार ने अनोखी - सरल शैली में कुछ सूत्र दिए हैं जिसके अवलम्बन से अल्प परिश्रम द्वारा हम सम्पूर्ण वन्दना को हृदयंगम कर दैनन्दिन रूप से शाश्वत निर्वाण क्षेत्र श्री सम्मेदशिखर जी की **भाव वन्दना** प्रतिदिन कर पुण्यार्जन कर सकते हैं।

वर्तमान चौबीसी के प्रत्येक तीर्थंकर की जाप भी करने का एक अनूठा / सहजता से ग्राह्य तरीका सुझाकर भी उन्होंने हम पर बड़ा उपकार किया है। प्रत्येक माह की जो भी तारीख हो उस नम्बर के तीर्थंकर की एक जाप उस दिन लगानी है तथा सिद्धक्षेत्र की भाव वन्दना भी प्रात: बिस्तर को छोड़ते ही करना है। शेष जो छ: - सात दिवस शेष रहते हैं वे महिलाओं के लिए विशेष सुविधा है कि जिन तीर्थंकर भगवन्तों की जाप उनके विशेष दिनों में छूट गयी है वे इन ६-७ दिवसों में पूर्ण कर सकती हैं।

उन्होंने इसे सिखाने हेतु लगभग १५- १६ व्हाट्सएप समूहों (२५०×१५ =२२५०) के सदस्यों को निरन्तर छह- सात मास तक अभ्यास कराकर स्वयँ तो पुण्यार्जन किया ही , साथ ही इतने सदस्यों को श्री सम्मेदशिखर जी से बहुत गहराई से सदा के लिए जोड़ दिया। सम्भव है इसी उपक्रम से उत्साहित और प्रेरित हो उन्होंने इस कृति के लेखन का कार्य प्रारम्भ किया है। उनकी परहित दृष्टि और परमार्थ प्रवृत्ति का ही प्रतिफलन है शाश्वत सिद्धक्षेत्र श्री सम्मेदशिखर जी पर यह कृति।

कहा जाता है कि

भाव सहित वन्दे जो कोई ताहि नरक- पशुगति नहीं होई। इसी की सार्थकता को क्रियात्मक रूप देने इस भाव वन्दना के महनीय कार्य को उन्होंने अपनी इस कृति के माध्यम से साकार रूप प्रदान कर दिया है।

भाव वन्दना के क्रम में हम विचार वीथी में विचरण करते - करते सत्य के अत्यन्त निकट पहुंच जाते हैं। यह सत्य क्या है ???

सत्य का तत्व अत्यन्त जटिल है। स्व- परहित का अभिप्राय रखकर की जाने वाली क्रिया सत्य है। अन्य शब्दों में **सत्य क्रियमाण है , स्थिर ज्ञानस्थ वह नहीं है। यह भी उसमें गर्भित है कि वह "क्रियात्मक से अधिक अभिप्रायात्मक या भावात्मक " है।**

अत: मूलत: वह सत्य स्वपरहित- मूलक हो गया है।

जो जन श्री सम्मेदशिखर जी की वन्दना करने से अभी तक , अन्यान्य कारणों से वंचित रह गए हैं , या जिन्होंने अनेक बार वन्दना का लाभ अर्जित कर लिया है , दोनों के ही लिए यह **भाव वन्दना** अत्यन्त हितकारी और पुण्यबन्ध का सशक्त कारण बनेगी। हमारे धर्मप्राण देश में समस्त सिद्धक्षेत्रों में श्रेष्ठ श्री सम्मेदशिखर जी सिद्धक्षेत्र ही शाश्वत् है और इस क्षेत्र का कण कण उर्जस्वित है क्योंकि यहां अनन्त काल से अनन्त तीर्थंकर प्रभुओं ने सिद्धत्व को प्राप्त कर जीवन सफल किया है। इन तीर्थंकर भगवन्तों के अतिरिक्त अनन्त मुनियों ने भी मोक्ष प्राप्त कर इस क्षेत्र के कण - कण को ऊर्जावान और पावन बना दिया है। ऐसे सिद्धक्षेत्र को अपनी लेखनी का विषय बना लेखिका ने हम सब पर महनीय उपकार किया है। इस हेतु से हम लेखिका का आत्मीय अभिनन्दन करते हैं एवं उन्हें इस कृति की रचना हेतु हार्दिक साधुवाद भी देते हैं। श्री सम्मेदशिखर की मिट्टी की महिमा को उद्योदित कर सम्पूर्ण मानव जाति पर आपका उपकार सदाकाल अविस्मरणीय रहेगा।

विचार वीचि आती है और लौट जाती है। परंतु वह न खाली आती है और न खाली लौट पाती है। वह अपने साथ कुछ नवीन रजकण लेकर आती है और कुछ पुराने रजकण भी ले जाती है । **व्यष्टि रूप में रजकण बदलते रहते हैं, परन्तु समष्टि रूप में रजकणों की वह परत सदा बनी रहती है।** श्री सम्मेदशिखर जी सिद्धक्षेत्र के रजकणों के रहस्य और महत्ता को लेखिका ने अपने ज्ञान की पैनी छेनी से अत्यन्त कुशलता से उकेरा है। उनके इस श्रमसाध्य कृत्य का हम सब पर सदा ही उपकार बना रहेगा।

कृति में कृतिकार ने अनेक तथ्यों को अपनी तीक्ष्ण बुद्धि से आलोकित किया है। अन्तिम कूट स्वर्णभद्र कूट (तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ जी) पर अवस्थित दो जगह चरण युगलों में कौन पुराने और मूल चरण हैं। इस गुत्थी को भी उन्होंने सुलझा दिया है। पर ऐसा निर्णय क्यों ?? यह बताना सम्भवत: वे विस्मृत कर गई हैं।

ऊपर वाले चरण पर उपलब्ध प्रशस्ति से यह स्पष्ट है कि नीचे गुफा स्थित चरणों (संवत् १९४९) से लगभग १०० वर्ष पूर्व ऊपर के चरण (संवत् १८४९ से) अस्तित्व में थे। यह तथ्य दोनों चरण युगलों की प्रशस्तियाँ से प्राचीनता का अन्तर स्पष्ट हो जाता है। उनका लेखन सरल / सुबोध भाषा में है। सभी दिए गए तथ्य बिना किसी ऊहा-पोह के ग्राह्य हैं क्योंकि वे तर्क की कसौटी पर कस कर ही प्रस्तुत किये गए हैं।

उन्होंने अपना अनुभव हम सबके साथ हमारे हितार्थ साझा किया है यह उनकी संवेदनशीलता और परहित समर्पित भावना को द्योतित करता है। उनकी इन प्रशस्त भावनाओं की अशेष अनुमोदनाएँ और हार्दिक अभिनन्दन। उनकी यह सर्वोपयोगी कृति अत्यन्त श्लाघनीय और अभिनन्दनीय और संग्रहणीय भी है। पुस्तक के चित्ताकर्षक रंगीन पृष्ठों पर मुद्रण अत्यन्त लुभावना बन पड़ा है।

अपने और अन्य जनों के जन्मदिवस या अन्य स्मरणीय तिथियों पर भेंट देने की सामग्री में इसे भमाहित किया जा सकता है।

यह अत्यन्त उपयोगी संग्रहणीय कृति है।

आर.के. जैन
अयोध्या नगर
रिंग रोड नम्बर -२
बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

लेखिका की कलम से...

सम्मेद शिखर भाव वंदना का उद्देशय

सम्मेद शिखर जी की भाव वंदना का उद्‌देशय केवल यही है कि सिद्ध क्षेत्र सम्मेद शिखर जी इस हुंडावसर्पिणी काल के कारण केवल बीस तीर्थंकरों की निर्वाण भूमि रही हैं।

और हम मुश्किल से साल में एकाध बार ही वंदना करने जा पाते हैं। और जब वहॉ जाकर वंदना करते हैं तो इतनी जल्दबाजी मे वंदना करते है कि कूटो के वर्ण, क्रम व कूटों की विशेषताऔ की और ध्यान ही नही दे पाते। बस हर टोंक पर अर्घ चढ़ाया, परिक्रमा लगाई, पुस्तक खोली अर्घ देखकर पढ लिया व सामग्री चढा दी बस यही तक सीमित रह पाते हैं।

बीस तीर्थंकरो की निर्वाण स्थली और हम इतने सस्ते में निपटा देते हैं और फिर सोचते है कि बस एक वंदना हो गई अब नरकगति से छुटकारा मिल गया।

बहुत से सदस्य ऐसे है जो अभी तक चालीस या पचास बार भी साक्षात वंदना कर चुके है। मगर जब उनसे पूछो कि किस कूट पर कौन से वर्ण के चरण अंकित है? कौन सी कूट पर बैल का चिन्ह बना है?

कौन सी कूट पर श्री राम जी ने पूजन विधान किया? प्रभाष कूट की रज को चमत्कारिक क्यो माना जाता है? श्री गौतम स्वामि सम्मेद शिखर जी से मोक्ष नही गये तो उनके चरण वहॉ क्यो बने है? वह भी सबसे पहले नम्बर पर और वहॉ पर 35 चरण युगल क्यो बने है? श्री राम चन्द्र जी ने पार्श्वनाथ भगवान की कूट की वंदना की या नही की? यदि नही की तो क्यो नही की? पार्श्वनाथ भगवान जी की कूट पर गुफा मे भी चरण बने है तो वास्तविक चरण कौन से है? श्री वासूपूज्य जी की कूट पर पॉच चरण युगल क्यो बने है? कौन सी कूट में चरण चारो दिशाऔ में खुले हुये है?

और भी बहुत सारी ऐसी जानकारी है जिनका उतर वह नही दे पायेगे क्योंकि हमने कभी यह जानने का प्रयास ही नही किया हमने केवल औपचारिकता निभाई बस हर कूट पर अर्घ चढाया व समझा कि हो गई वंदना तो मेरा मन बस यही है कि आप सभी को हर टोंक का क्रम व हर टोंक के चरणो का वर्ण व किस कूटं की क्या विशेषताये है यह हम सभी को ज्ञात होने चाहिये।

हम step by step चलेगें। हर कूट की विशेषताये आपके साथ साझा करेंगे।

फिर उसके पश्चात हम किस कूट से कितने मुनियो ने सिद्धत्व को प्राप्त किया व किस कूट की भाव सहित वंदना का कितने उपवास का फल यह सब जानकारी भी साझा करेंगे। हम बहुत सरल विधि से ये याद करा देंगे। इस यात्रा में हम सभी यात्रियो को जागृत रहना हैं। इस भाव वंदना को करने के पश्चात, जब हम साक्षात में वंदना करेंगे तब हमारा आनंद व कर्म निर्जरा अनंत गुणा अधिक होंगी। अब हमारा ध्यान अन्यत्र नही भटकेगा, हर कूटों को हम ध्यानपूर्वक दर्शन करेंगे क्योंकि अब हर कूटो की विशेषतायें व अधिकतर जानकारी हमें मालूम होगी इसलिये हर कूट पर ध्यान लगेगा और बहुत भक्तिपूर्वक वंदना होगी हमारी क कर्म निर्जरा भी अनंतगुणी होगी। **सभी को जयजिनेन्द्र।**

वैशाली जैन

- धर्मपत्नी श्री पंकज जैन, दिल्ली
पारस चैनल, चेयरमैन

आदरणीया प्रिय वैशाली भाभीजी ...

जय जिनेंद्र

श्री सम्मेद शिखरजी महातीर्थ की भाववंदना के बारे में जब देखा / अनुभव किया, तब ऐसा लगा की कोरोना के इस प्रतिकूल समय में प्रत्यक्ष जाना तो मुमकीन नही; पर इतनी लगन और मेहेनत से बनाई इस सुंदर व्यवस्था का लाभ तो सभी को जरूर लेना चाहिये।

महातीर्थ सम्मेद शिखरजी की भाववंदना आपने whatsapp के माध्यम से बहुत ही अच्छे से करायी।आपने हम सभी का उत्कृष्ट रूप से धर्मध्यान करवाया, समय का सदुपयोग हुवा और आगे भी ,हम लोग अब इस पुस्तक के माध्यम से ऐसे ही भाववंदना कर सकेंगे ।

आप से हमेशा ऐसे ही जनोपयोगी धर्मकार्य होते रहे ऐसी मंगल भावना के साथ सभी की ओर से बहुत बहुत धन्यवाद

हम सब मिलकर इस पुण्यसंचयिनी वंदना का पुरे भाव से आनंद ले ऐसी शुभकामना !

व्रती डॉ मोनिका सुहास शहा,
मुंबई

धर्मस्नेही बंधुओ,

सादर जयजिनेंद्र

श्रीमती वैशाली जी ने व्हॉटसअप के माध्यम से हम सभी को तीर्थाधिराज श्री. सम्मेद शिखर जी की भाव-वंदना बडे ही आनंद और उत्साहपुर्वक करवायी और पुण्यार्जन किया । इसका बहुत अच्छा प्रतिसाद मिला और बडी संख्या में अन्य साधर्मी जन पुन:लाभ प्राप्त करना चाहते है ।

बडी ही प्रसन्नता की बात है की वैशाली जी द्वारा श्री सम्मेद शिखर जी भावयात्रा अब आपको पुस्तिका के माध्यम से करायी जायेगी जिससे हमें भाव-वंदना का और भी अधिकलाभ व आनंद प्राप्त हो सकेगा और स्मरण करने में भी सरलता होगी। इस अत्यंत शुभ व सद्कार्य कार्य के लिए हम अपनी छोटी सी बहना वैशाली का हार्दिक अभिनंदन व धन्यवाद ज्ञापित करते हैं । भाव-यात्रा पुस्तकार्थ आपको बहुत बहुत मंगल शुभकामनायें।

पद्मा पंकज जैन
मुंबई

जय जिनेन्द्र वैशाली जी,

विदेश में रहते हुए अकसर दिल के एक कोने में खालीपन सा एहसास हंमेशा ही बना रहता है। सदा ही लगताहै कि कुछ धर्म, धर्म सभा, अपने धर्म का साथ नहीं मिल रहा, कुछ है जो छुट रहा है, वो सत्संगति जो हमे अपने देश और अपनों के बीच मिलतीहै, संरक्षण और सुरक्षा का एहसास। इन्हीं भावों की उधेड़बुन में जीन व्यतीत हो रहा था कि मुझे वैशाली जी व राजकुमार भईया से जुड़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। शायद ये दिल की आवाज थी जो प्रभु सुन लेते है। एक अदभुद अनुभव था शिखर जी की भाव वंदना सभी के साथ, जिस अदभुत ऊर्जा के साथ वैशाली जी और राजकुमार भईया जी सबको प्रेरित करते थे उसकी सरहना के लिए मेरे पा शब्द हीं नहीं है। मेरे बहुत सारे प्रश्नों के उत्तर व्यक्तिगतरुप से भी आपने दिए। आपकी उर्जा और साथ बहुत से लोगों के जीवन को रुपांतरित कर रहे है। उसके लिए आपको अनेक सुभकामनाएं। आपने अपने जीवन को सदभावना में समर्पित कर दिया है, उसके लिए आप का बहुत आभार। धन्यवाद

नीतू जैन
कोलंबस, युएसए
12-1-2022

जय जिनेन्द्र वैशाली जी,

आपने जो, श्री सम्मेदशिखर जी की, भाव वंदना करवाई थी, उसके बारे में कुछ लिख रही हूँ। वह भाव वन्दना, हमारे लिये बहुत ही आनन्दमयी रही। हमें श्री सम्मेदशिखर जी के बारे कुछ अधिक पता नहीं था। विदेश में रहने के कारण, हमने सिर्फ एक बार ही, शिखर जी जाकर वन्दना की थी। पर जब आपके साथ भाव वन्दना की तो, आपने बहुत अच्छी तरह शिखर जी के बारे में समझाया, पढ़ाया और याद कराया। आप जो टोंकों की फोटो भेजती थीं वो हर समय आँखों के सामने घूमती थीं। हर समय सम्मेद शिखर जी का ध्यान रहता था। आपके कारण, हमारा धर्म बढ़ा, पुण्य बढ़ा। कहा भी है —भावसहित वन्दे जो कोई,

नरक पशुगति ना होई।

भाव सहित वन्दना, आपने करवाई। हम अमेरिका में रहने वालों का, आपको बहुत बहुत धन्यवाद। आपने हमारा जीवन बदल दिया।

मधु जैन अजय जैन,
यू एस ए

जब सारी दुनिया करोना महामारी से जूझ रही थी सभी के मन अशांत थे उस समय वैशाली जी के भाव वंदना से जुड़कर मन को अथाह शांति मिली। और हमने उसी तरह से शिखरजी की वंदना भाव से कि जैसे स्वयं हम पर्वतराज पर जा कर आए हो साक्षात जाकर भी हम टोंक के नाम याद नहीं कर पा रहे थे अब पूरी टॉक के नाम याद हो गए हैं।

आपका आभार

इस तरह के किसी भी प्रोग्राम का हिस्सा बनना मेरे लिए बड़े गर्व की बात है **जय जिनेंद्र**

निवेदिता जैन
दोहा कतर

प्रारंभिक वंदना

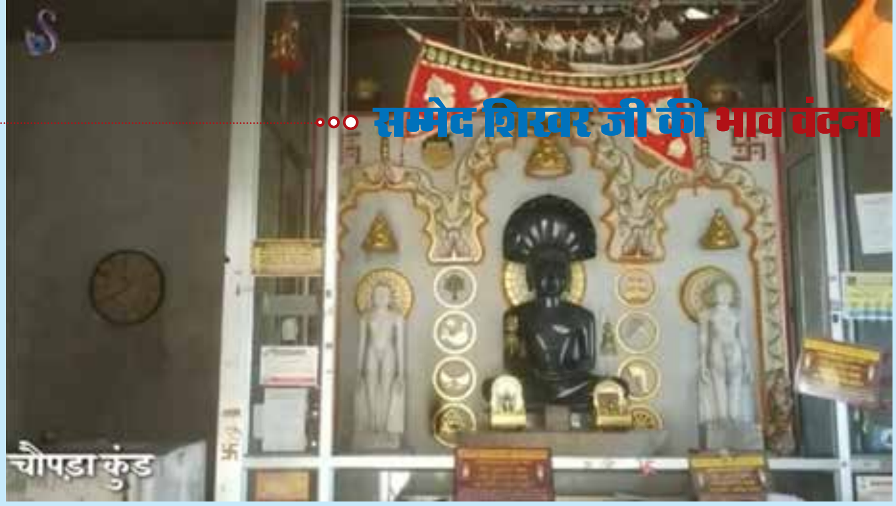

श्री सम्मेद शिखर जी की प्रारंभिक वंदना जो ईसरी से प्रारंभ होती हैं। तो चलिये हम जानते हैं पर्वत की वंदना से पूर्व ईसरी, निमिया घाट से मधुबन तक के सफर के विषय में श्री सम्मेदशिखर जी से सम्बन्धित कुछ आवश्यक जानकारियाँ, आपके साथ साझा करने का प्रयास कर रहे हैं। आइये, हम अपनी वन्दना ईसरी से प्रारम्भ करते हैं। हम रेलमार्ग से शाश्वत सिद्ध क्षेत्र के वन्दनार्थ निकलते हैं, तब हमें पारसनाथ स्टेशन पर उतरना होता है। स्टेशन का नाम पारसनाथ है परन्तु यह रेल्वे स्टेशन ईसरी ग्राम में स्थित है। ईसरी स्थित तेरापंथी दिग. जैन मन्दिर के मूलनायक श्री चन्द्रप्रभ जी हैं। ईसरी ग्राम से अगर हम सीधे मधुबन पहुँचना चाहें तो यह दूरी लगभग 24 कि.मी. है। क्षेत्र की गाड़ी उपलब्ध रहती है। एक दूसरा मार्ग भी है जिससे हम दो जगहों पर जिनमन्दिरों के दर्शन लाभ लेते हुए मधुबन पहुँच सकते हैं। ईसरी से नीमिया घाट लगभग छ: किलोमीटर की दूरी पर है । नीमिया घाट में दो जिन मन्दिर जी हैं। दोनों जिनमन्दिरों के मूलनायक तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ जी हैं।

मधुवन से नीमिया घाट होते हुए इस पर्वत की परिक्रमा लगभग ५२ किलोमीटर की है। ईसरी (तत्कालीन बिहार प्रान्त) में आचार्य श्री विद्यासागर जी महामुनिराज ने सन् 1983 में वर्षावास (इस प्रान्त में एकमात्र वर्षावास) सम्पन्न किया था।

आचार्य श्री जी ने ईसरी से ही चलकर, नीमिया घाट होते हुए कूटों की वन्दना की हैं। इसी [1983] चातुर्मास के काल में ही 25 सितम्बर 1983 को, उन्होंने 5 मुनि दीक्षाएँ प्रदान की थी।

1- .मुनि श्री सुधासागर जी
2–.मुनि श्री समता सागर जी
3- .मुनि श्री स्वभावसागर जी
4- .मुनि श्री समाधिसागर जी और
5- मुनि श्री सरलसागर जी।

ईसरी में ही श्री गणेशप्रसाद वर्णी जी की समाधि हुई थी तथा आचार्य श्री जी के ईसरी प्रवास के काल में ही क्षुल्लक श्री जिनेन्द्र वर्णी जी की समाधि हुई थी।

ईसरी से पालगंज लगभग 35 किलोमीटर की दूरी पर है। पालगंज में स्थित एकमात्र जिनमन्दिर जी में मूलनायक श्री पार्श्वनाथ जी की अत्यन्त मनोहारी और अतिशयकारी प्रातिमा जी विराजित है। इस भव्य जिनमन्दिर जी में विराजित सभी प्रतिमाएँ, तीर्थंकर श्री पार्श्व प्रभु जी की ही हैं। पूर्व में श्री सम्मेदशिखर जी की वन्दना पालगंज से ही प्रारम्भ होती थी। पालगंज से मधुबन की दूरी लगभग 17 किलोमीटर है। वर्तमान में तो वन्दना मघुबन से ही प्रारम्भ करते हैं। मधुबन (तलहटी) से वन्दना प्रारम्भ करते हैं तो लगभग चार किलोमीटर की चढ़ाई करने के पश्चात् गंधर्व नाला मिलता है। (वन्दना से लौटने पर यहीँ भाता मिलता है - दिगम्बर / श्वेताम्बर दोनों के ही भाता गृह बने हुए हैं)। गन्धर्व नाला पार करने के पश्चात् लगभग दो किलो मीटर की दूरी पर शीतल नाला (सीता नाला) आता है। सीता नाला को भी पार करते हुये जब हम लगभग दो किलोमीटर चढ़ाई और तय कर लेते हैं, तब चौपड़ा कुण्ड आता है। चौपड़ा कुण्ड पर स्थित दिगम्बर जैन मन्दिर जी का निर्माण सन् 1994- 1995 के लगभग ही हुआ है। चौपड़ा कुण्ड पर स्थित जिनमन्दिर जी में श्री पार्श्वनाथ जी की मूलनायक, श्याम वर्णीय प्रतिमा जी बीचों - बीच पद्मासन में विराजित है । उनके एक और श्री चन्द्रप्रभ जी खड़्गासन में) श्वेत वर्णीय, व दूसरी और श्री बाहुबली स्वामी जी की श्वेत वर्णीय खड़्गासन में, विराजित हैं। दो और छोटी सी जिन प्रतिमा जी (धातु की) इसी वेदिका पर विराजित हैं। अब यहाँ पर दर्शन / पूजन आदि करके, यात्री गण अपने धोती दुपट्टा पहिन कर / अपने गणवेश में, वन्दना, सानन्द / निर्विघ्न सम्पन्न हो, ऐसी भावना लेकर अग्रिम वन्दना हेतु बढ़ते हैं। यहाँ से लगभग एक किलोमीटर की दूरी पर, मोड़ को जैसे ही पार करते हैं, एक समतल मैदान दिखाई देता है और ऐसा लगता है मानो स्वर्ग लोक (अलकापुरी) में ही पहुंच गये हों। इस समय जो आनन्दानुभूति होती है उसको केवल अनुभव किया जा सकता है - शब्दों में बताया नहीं जा सकता। वन्दना के प्रथम पड़ाव पर पहुँच कर हृदय आनन्द से आप्लावित हो उठता है। एक साथ बहुत सारी कूट दिखाई देने लगती हैं। अभी तक तो एक कूट के दर्शनों के लिये तरस रहे थे और अब दर्शन हुये तो एक साथ, इसी समतल मैदान में ही दस कूट एक साथ नजर आ रही हैं। इस समतल मैदान में सबसे प्रथम कूट श्री गौतम स्वामी जी की है। तब तक के लिये सभी यात्रियों को मङ्गल, शुभ कामनाएँ। इसी तरह यात्रा के सागर में आनन्द की हिलोरें लेते रहिये, आगे की वन्दना के शुभ भाव संजोकर।

सभी को जय जिनेन्द्र।

वंदना को समझने के लिये तीन पड़ाव में विभक्त, सरल प्रणाली

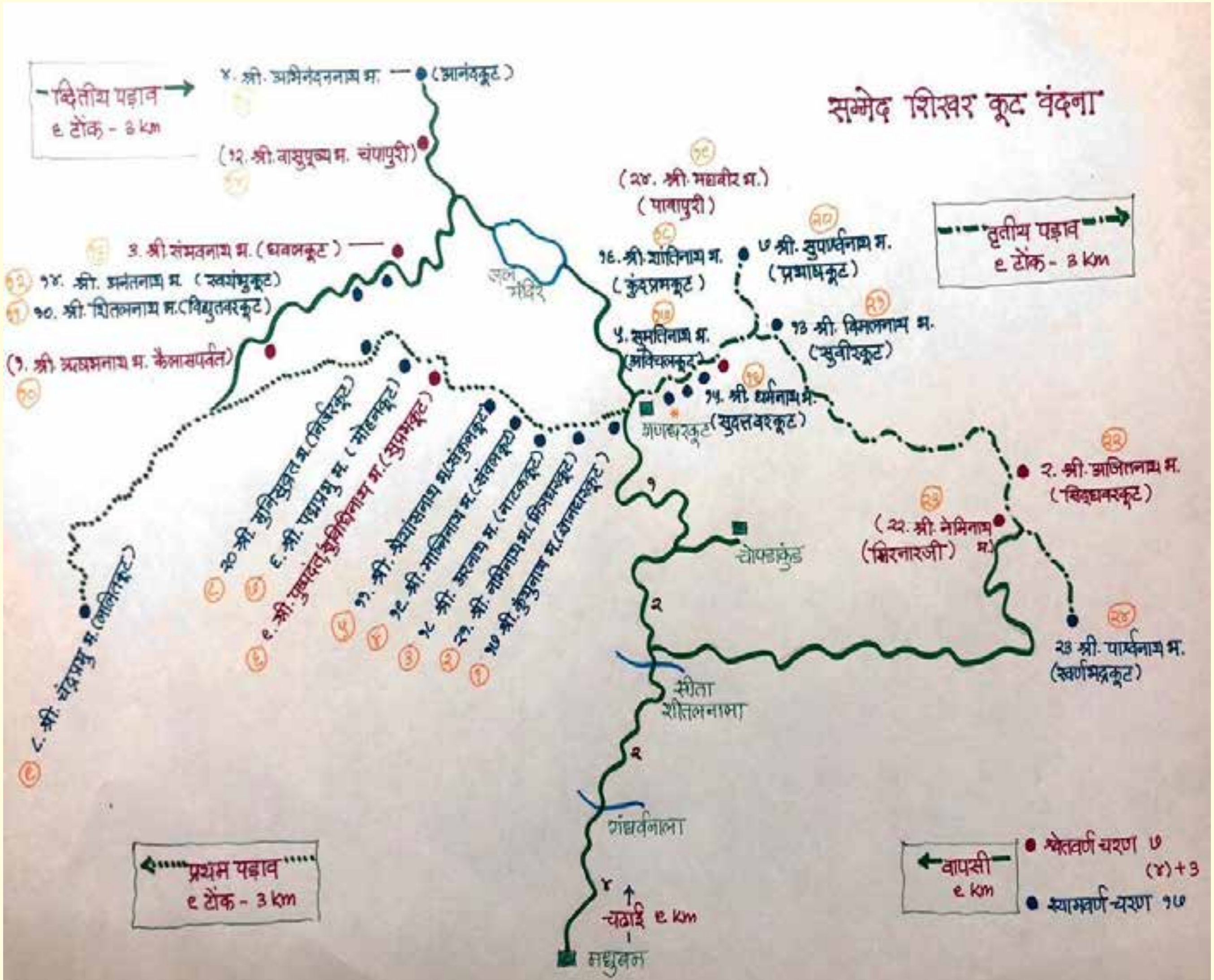

हमने इस यात्रा को सरल रुप से समझने के लिये, इसे तीन पड़ाव में विभाजित किया है ताकि हम सभी आसानी से समझ सके। पर्वत की वंदना टोटल 9 किलोमीटर की हैं। हमने तीन तीन किलोमीटर की दूरी के हिसाब से, इसे तीन भागो में विभाजित किया हैं।

प्रथम पड़ाव

17 - श्री कुन्थुनाथ जी- ज्ञानधर कूट
21 - श्री नमि नाथ जी - मित्रधर कूट
18 - श्री अर नाथ जी - नाटक कूट
19 - श्री मल्लिनाथ जी - संवलकूट
11 - श्री श्रेयांसनाथ जी - संकुल कूट
9 - श्री पुष्पदंत जी (श्री सुविधि नाथ जी)- सुप्रभ कूट
6 - श्री पद्मप्रभ जी - मोहन कूट
20 - श्री मुनिसुव्रत नाथ जी - निर्जर कूट
8- श्री चन्द्रप्रभ जी - ललित कूट

प्रथम पड़ाव पूर्ण हुआ। प्रथम पड़ाव की कूटो के क्रम याद करने के लिये

तीर्थंकरों के नम्बरो से क्रम

17, 21, 18, 19, 11, 9, 6, 20, 8

प्रथम पड़ाव सानंद संपन्न

अब द्वितीय

अब द्वितीय पड़ाव की और गमन करेंगे

1 - श्री ऋषभनाथ जी - कूट पर नाम नही (कैलाश पर्वत)
10 -श्री शीतल नाथ जी- विधुतवर कूट
14- श्री अनंतनाथ जी - स्वयंभू कूट
3 - श्री संभव नाथ जी - धवल कूट
12 -श्री वासूपूज्य जी - कूट पर नाम नही (चंपापुर से मोक्ष)
4- श्री अभिनंदन नाथ जी - आनंद कूट

द्वितीय पड़ाव को याद करने का क्रम

1, 10, 14, 3, 12, 4

द्वितीय पड़ाव सानंद संपन्न

तृतीय पड़ाव

अब तृतीय पड़ाव की और गमन

15 -श्रीधर्म नाथ जी - सुदत्तवर कूट
5 - श्री सुमति नाथ जी - अविचल कूट
16 -श्री शांतिनाथ जी - कुन्द प्रभ कूट
24 -श्री महावीर स्वामि- कूट पर नाम नही (पावापुरी से मोक्ष)
7 - श्री सुपार्श्व नाथ जी - प्रभाष कूट
13 -श्री विमल नाथ जी - सुवीर कूट
2 - श्री अजित नाथ जी - सिद्धवर कूट
22 -श्री नेमिनाथ जी - कूट पर नाम नही (गिरनार जी से मोक्ष)
23 -श्री पार्श्व नाथ जी - स्वर्णभद्र कूट

कूटो को याद करने का क्रम

15, 5, 16, 24, 7, 13, 2, 22, 23

अब हमारी सम्मेद शिखर जी की भाव वंदना तृतीय पड़ाव पर सानंद संपन्न

जिन कूटो पर नाम अंकित नही

सम्मेद शिखर जी में बीस तीर्थंकरो की कूटों पर ही कूटों के नाम हैं। चार तीर्थंकरों की कूटो का नाम अंकित नही हैं जो तीर्थंकर इस हुण्डावसर्पिणी काल के दोष के कारण, श्री सिद्ध क्षेत्र सम्मेद शिखर जी से मोक्ष नही गये अन्य क्षेत्रो से मोक्ष गये हैं। सम्मेद शिखर जी में उन चार तीर्थंकरो की कूटो पर कोई नाम नही हैं। और उन चारों कूटो पर चरणो का वर्ण भी श्वेत हैं।

1- श्री आदिनाथ जी - कैलाश पर्वत
12- श्री वासूपूज्य जी - चंपापुर मंदारगिरि पर्वत
22- श्री नेमिनाथ जी - गिरनार जी उर्ज्यंत पर्वत
24 - श्री महावीर स्वामि - पावापुरी के पद्म सरोवर

इन चार तीर्थंकरो के अलावा, सम्मेद शिखर जी से सिद्धत्व पद को प्राप्त करने वाले, बीस तीर्थंकरों की कूटों के नाम हैं।

समझने के लिये सरल प्रणाली

श्वेत वर्णीय चरण वाले तीर्थंकर

जिन चार तीर्थंकर ने सम्मेद शिखर जी से सिद्धत्व पद को प्राप्त नही किया उन सभी तीर्थंकर की कूट पर श्वेत वर्णीय चरण अवस्थित है

1 - श्री आदिनाथ जी
12 - श्री वासूपूज्य जी
22 - श्री नेमिनाथ जी
24 - श्री महावीर स्वामी जी

ये चार तीर्थंकर सम्मेद शिखर जी से मोक्ष नही गये सम्मेद शिखर जी में इनकी जो कूट बनाई गई है उन पर श्वेत वर्ण के चरण अंकित हैं और इनके अलावा

2 - श्री अजित नाथ जी
3 - श्री संभव नाथ जी
9 - श्री पुष्पदंत जी

ये तीन तीर्थंकर की कूट पर श्वेत वर्ण के चरण अंकित है इनमे से श्री अजितनाथ जी सम्मेद शिखर जी से सबसे पहले मोक्ष गये है क्योकि आदिनाथ भगवान यहॉ से मोक्ष नही गये हैं।

1 - पहले श्री आदिनाथ जी
2 - दूसरे श्री अजितनाथ जी
3 - श्री संभवनाथ जी
9 - नौवे श्री पुष्पदंत जी
12 - बारहवें श्री वासुपूज्य जी
22 - बाईसवें श्री नेमिनाथ जी
24 - चौबीसंवे श्री महावीर स्वामि जी

इन नम्बर के 7. तीर्थंकरों की कूट पर श्वेत वर्ण के चरण है शेष 17 तीर्थंकरो की कूट पर श्याम वर्ण के चरण अंकित हैं।

कूटो के नाम कंठस्थ करने के लिये सरल ट्रिक्स

1 - श्री कुन्थु नाथ जी की तीर्थंकर में
सबसे पहली कूट हैं। यानि सबसे पहली कूट का ज्ञान होता हैं।
श्री कुन्थु नाथ जी, ज्ञानधर कूट

---

2 - श्री नमिनाथ जी व श्री नेमिनाथ जी
के नाम मिलते जुलते हैं। उनके नामो में मित्रता हैं।
श्री नमि नाथ जी मित्रधर कूट

3- श्री अर नाथ जी
अरि यानि शत्रु श्री अरनाथ जी कहते
शत्रु में न अटक (नाटक)
श्री अरनाथ जी नाटक कूट

4–श्री मल्लि नाथ जी
संवल प्रदाता
संवल जिनको चाहिये
वह श्री मल्लिनाथ जी को ध्याता
श्री मल्लिनाथ जी, संवल कूट

5- श्री श्रेयांस नाथ जी
श्रेष्ट कुल (संकुल)
श्री श्रेयांस नाथ जी संकुल कूट

6- श्री पुष्पदंत जी(सुविधि)नाथ जी
की कूट से सर्वाधिक कूटो के दर्शन होते। सुप्रभा
श्री सुविधिनाथ जी सुप्रभ कूट

---

7 म्हारा पद्मप्रभ जी की मोहिनी मूरत, म्हारे मन भायी जी
श्री पद्मप्रभ जी मोहन कूट

8- श्री मुनिसुव्रत नाथ जी की कूट से सर्वाधिक मुनिराजो ने सिद्धत्व पद को प्राप्त किया हैं। यानि सबसे अधिक निर्जरा इसी कूट से हुई हैं।
श्री मुनिसुव्रत नाथ जी निर्जर कूट

---

9 - श्री चन्द्रप्रभ जी की कूट से
सुंदर (ललित) दृश्य दिखता हैं।
श्री चन्द्रप्रभ जी ललित कूट

10- जल का स्वभाव शीतल होता जल से बनती विधुत
श्री शीतलनाथ जी विधुतवर कूट

11- अनंता गुणधारी जो प्राकृतिक स्वयंभू हैं।
श्री अनंतनाथ जी स्वयंभू कूट

12- श्री संभव नाथ जी कूट पर श्वेत वर्ण (धवल) चरण अंकित हैं।
श्री संभवनाथ जी धवल कूट

13- श्री अभिनंदन नाथ जी की कूट पर,
बंदर पाते आनंद अपार
श्री अभिनंदन नाथ जी आनंद कूट

14- धर्म सदा सुख ही देता सुद्त
सु = सुख
दत्त = देने वाला (दाता)
श्री धर्मनाथ जी सुदत्तवर कूट

15- श्री सुमति नाथ जी मति प्रदाता
मति (सदबुद्धि) जिसको आ जाये। वह विचलित नही होता।
यानि अविचल हो जाता
श्री सुमति नाथ जी अविचल कूट

16- सोलंहवे तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ
जी के बाद 17 वे श्री कुन्थु नाथ जी आते हैं।
श्री शान्तिनाथ जी कुन्दप्रभ कूट

17- श्री सुपार्श्वनाथ जी हरित वर्ण की
प्रभा से युक्त (प्रभाष) कूट
श्री सुपार्श्वनाथ जी प्रभाष कूट

18- श्री विमल नाथ जी के नाम का प्रथम अक्षर व से शुरु हो रहा है। उनकी कूट के नाम में भी व शब्द आ रहा है
सुवीर कूट
श्री विमलनाथ जी, सुवीर कूट

---

19 - श्री अजितनाथ जी सम्मेद शिखर जी से सिद्ध पद को प्राप्त करने वाले प्रथम तीर्थंकर हैं।
श्री अजितनाथ जी सिद्धवर कूट

20- लोहे को जो स्वर्ण
बनाता, वह है पारसमणि
श्री पार्श्वनाथ जी, स्वर्णभद्र कूट

प्रथम पड़ाव

श्री सम्मेदशिखर जी की कूट सम्बन्धी जानकारियाँ, आपके साथ साझा करने का प्रयास कर रहे हैं । श्री सम्मेद शिखर जी की पूरी वन्दना मधुबन से लगभग 27 किलो मीटर की है जिसमें नौ किलो मीटर की चढ़ाई, नौ किलो मीटर की उतराई व नौ किलोमीटर की, पर्वत पर कूटों की वन्दना है। श्री सम्मेदशिखर जी की वन्दना तो हमने अब तक न जाने कितनी बार की है, मगर उन कूटों को, चरण को, व उन कूटों की विशेषताओं पर कभी आवश्यक ध्यान नही दिया। हर बार केवल वंदना की गिनती करने, में ही अटक कर रह जाते हैं। इस बार से ऐसा न हो, ऐसा उपक्रम हम करेंगे।

अब हम अपनी भाव वन्दना के माध्यम से पिछली हुई साक्षात् वन्दना को जोड़ कर, इसका revision करेंगे। हम इन कूटों एवं उनके क्रम को व चरणों को याद करने का उपक्रम करेंगे, तभी हमारे भावों में विशुद्धि आयेगी व कूट का ध्यान बढ़िया से लगा पावेंगे। हम इस वन्दना को समझने के लिये सरल प्रणाली अपनायेंगे। हम पर्वत पर जो 9 किलोमीटर की वन्दना है, उसे तीन भागों में विभक्त करके 3- 3 किलो मीटर के मार्ग से समझकर याद करने का प्रयास करेंगे। प्रथम भाग 1 का विवरण जानने का प्रयास करेंगे।

भाग 1

भाग 1 में हम श्री गौतम स्वामी जी की कूट से चलकर श्री चन्द्रप्रभ जी की ललितकूट तक का मार्ग समझेंगे। श्री गौतम स्वामी जी की कूट मंगलाचरण स्वरुप है। यहाँ पर 34 चरण - युगल श्वेत व 1 श्याम वर्णीय चरण हैं। यह कूट चौबीस तीर्थंकरो के मुख्य गणधरो की है।

अब इसके पश्चात् :

1 सत्रहवें तीर्थंकर श्री कुन्थु नाथ जी : ज्ञानधर कूट
[श्याम वर्णीय चरण युगल]।

2 इक्कीसवें तीर्थंकर श्री नमिनाथ जी : मित्रधर कूट।
[श्याम वर्णीय चरण]

3 अठारहवें तीर्थंकर श्री अरनाथ जी : नाटक कूट
[श्याम वर्णीय चरण]।

4 उन्नीसवें तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ जी : संवल कूट।
[श्याम वर्णीय चरण युगल]

5 ग्यारहवें तीर्थंकर श्री श्रेयांस नाथ जी : संकुल कूट।
[श्याम वर्णीय चरण]

6 नौवें तीर्थंकर श्री पुष्पदंत जी - सुप्रभ कूट।
[श्वेत वर्णीय चरण]

7 छट्ठे तीर्थंकर : श्री पद्मप्रभ जी: मोहन कूट।
[श्याम वर्णीय चरण - युगल]

8 बीसवें तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत नाथ जी : निर्जर कूट।
[श्याम वर्णीय चरण - युगल]

9 श्री चन्द्रप्रभ जी ललितकूट।
[श्याम वर्णीय चरण - युगल]

यहाँ का तक का पड़ाव हमने तय कर लिया है। यह तीन किलो मीटर का प्रथम चरण हम पूर्ण कर चुके।

ध्यान देने योग्य बिन्दु :

1 केवल नौवे तीर्थंकर श्री पुष्पदन्त जी (श्री सुविधिनाथ जी) की कूट पर श्वेत वर्ण के चरण हैं। इन नौ कूटों पर शेष सभी तीर्थंकरों के चरण श्याम वर्णीय हैं।

2 इन नो कूटों में सत्रहवें तीर्थंकर से 21 वे तीर्थंकर तक, पाँच तो ये ही हो गये, फिर छठे, आठवे, नौवे व ग्यारहवें, चार तीर्थंकर, ये इस प्रकार भाग एक के कुल नौ तीर्थंकरों के नाम, अपने स्मृति - पटल पर स्थायी रूप से अंकित कर लीजिये।

आज हमने अपनी वन्दना के तीन भागों का प्रथम चरण पूर्ण किया है। श्री मुनिसुव्रत नाथ जी तक, एक किलोमीटर की यात्रा तय की, फिर श्री मुनिसुव्रत नाथ जी से श्री चन्द्रप्रभ जी तक, ललितकूट का मार्ग लगभग "दो किलोमीटर" का है। इस प्रकार श्री गौतम स्वामी जी से श्री चन्द्रप्रभ जी तक की वन्दना का तीन किलोमीटर का मार्ग हम सबने सानन्द / निर्विघ्न संपन्न कर लिया हैं। यहाँ तक की जानकारी व कूटों के क्रम व चरण के वर्ण हमें याद करने हैं।

सुधीजन भूल सुधार कर पढ़ें।
जय जिनेन्द्र

श्री सम्मेद शिखर जी वंदना का द्वितीय पड़ाव

श्री सम्मेदशिखर जी की 3 किलोमीटर की वन्दना का मार्ग हमने तय कर लिया - प्रथम भाग के माध्यम से। अब द्वितीय भाग के माध्यम से आगे की तीन किलोमीटर की वन्दना का मार्ग, हम पार करेंगे।

तो चलिये आज हम सभी चलते हैं द्वितीय भाग / पार्ट की ओर : इस द्वितीय पड़ाव यानी तीन किलोमीटर के सफर में केवल छह तीर्थंकर की ही कूट अवस्थित हैं। तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभ जी की कूट पर हम पहुँच चुके थे। यात्रा को और आगे बढ़ाते हैं

यहाँ पर हम चलेंगे :

1 प्रथम तीर्थंकर श्री आदिनाथ जी / वृषभनाथ जी की कूट पर एक चरण - युगल {श्वेत वर्णीय चरण} अवस्थित हैं। कूट पर कोई नाम अंकित नहीं है। प्रथम तीर्थंकर ने कैलाश पर्वत (श्री अष्टापद जी) से मोक्ष प्राप्त किया है न कि श्री सम्मेदशिखर जी से।

2 दसवें तीर्थंकर श्री शीतल नाथ जी। विधुतवर कूट { श्याम वर्णीय चरण}

3 चौदहवें तीर्थंकर श्री अनंत नाथ जी : स्वयंभू कूट, {श्याम वर्णीय चरण }

4 तीसरे तीर्थंकर श्री सम्भवनाथ जी : धवल कूट: श्वेत वर्णीय चरण कूट का नाम भी धवल और चरण का वर्ण भी धवल।

5 बारहवें तीर्थंकर श्री वासूपूज्य जी : {श्वेत वर्णीय पाँच चरण - युगल} श्री वासूपूज्य जी के, श्री चम्पापुर जी में पाँचों कल्याणक हुये। वे भी श्री सम्मेद शिखर जी से मोक्ष नहीं गये हैं, इसीलिये कूट पर नाम अंकित नही है।

6 चौथे तीर्थंकर श्री अभिनन्दन नाथ जी : आनन्द कूट, { श्याम वर्णीय चरण } अब इस कूट के पश्चात् जल मंदिर नीचे बीचों - बीच घाटी में पड़ता है। अब जल मन्दिर से सीधी खड़ी चढ़ाई को पार करते हुये हम पुन: श्री गौतम गणधर वाले समतल मैदान में पहुँच जाते हैं।

द्वितीय भाग की हमारी वन्दना हम यही पूर्ण करके, तृतीय भाग की वन्दना के पड़ाव को पार करके, श्री सम्मेदशिखर जी की वन्दना को पूर्ण करेंगें । तब तक अपनी डायरी व पैन में सब नोट करते जायें जब तक कि ये सभी कूटों के क्रम व चरणों के वर्ण हमें याद न हो जाते।

ध्यान देने योग्य बिन्दु :

श्री आदिनाथ जी कैलाश पर्वत से मोक्ष गये। श्री वासुपूज्य जी श्री चम्पापुर जी से मोक्ष गये। उनके पाँचों कल्याणक श्री चम्पापुर जी में ही हुये, इसीलिये पाँच चरण- युगल बनाये हुये हैं। श्री सम्मेद शिखर जी में यह टोंक केवल प्रतीक स्वरुप बनाई है, इसीलिये इन दोनों कूटों के नाम अंकित नहीं हैं और इन दोनों तीर्थंकर के चरण श्वेत वर्णीय हैं। इन छह तीर्थंकरो की कूटों में तीन तीर्थंकरों के श्वेत वर्णीय चरण युगल व तीन तीर्थंकरों के श्याम वर्णीय चरण अंकित हैं। इस पड़ाव में पहले, तीसरे, चौथे, दसवें, बारहवें व चौदहवें, ये छह तीर्थंकर आते हैं।

टोंक को याद करने का क्रम

1 पहले श्री आदिनाथ जी
10 दसवें श्री शीतलनाथ जी
14 श्री अनंतनाथजी
3 तीसरे श्री संभवनाथ जी
12 बारहवें श्री वासुपूज्य जी
4 चौथे श्री अभिनंदन नाथजी

श्री सम्मेद शिखर जी वंदना का तृतीय पड़ाव

श्री सम्मेद शिखर जी की 6 किलोमीटर का वन्दना - पथ हमने तय कर लिया है, प्रथम व द्वितीय पड़ाव के माध्यम से। अब तृतीय भाग के माध्यम से आगे की तीन किलोमीटर की वन्दना का मार्ग, हम पूर्ण करेंगे। तोहम सभी चलते हैं अपनी इस अधूरी वन्दना को पूर्णता प्रदान करने हेतु। इस तृतीय पड़ाव में कुल नौ तीर्थंकर की कूट समाहित हैं। यह तृतीय खण्ड भी श्री गौतम गणधर स्वामी वाले मैदान से ही प्रारम्भ होगा।

बस अन्तर मात्र इतना आ जायेगा : प्रथम पड़ाव में हम श्री गौतम स्वामी जी की कूट से दाहिनी ओर चले थे पर अब तृतीय पड़ाव में हम श्री गौतम स्वामी जी की कूट से बायीं ओर चलेंगे।

1 **पन्द्रहवें तीर्थंकर श्री धर्मनाथ जी :** सुदत्त वर कूट { श्याम वर्णीय चरण}।

2 **पाँचवे तीर्थंकर श्री सुमतिनाथ जी:** अविचल कूट {श्याम वर्णीय चरण}

3 **सोलहवें तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ जी :** कुन्दप्रभ कूट {श्याम वर्णीय चरण}

4 **चौबीसवें तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी जी,** कूट पर नाम अंकित नहीं है क्योकि चरम तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी जी, श्री पावापुरी जी के पद्म सरोवर से मोक्ष गये हैं। यहाँ पर {श्वेत वर्णीय चरण} हैं।

5 **सातवें तीर्थंकर श्री सुपार्श्व नाथ जी :** प्रभाष कूट {श्याम वर्णीय चरण}।

6 **तेरहवें तीर्थंकर श्री विमल नाथ जी :** सुवीरकूट {श्याम वर्णीय चरण}।

7 **दूसरे तीर्थंकर श्री अजितनाथ जी :** सिद्धवर कूट { श्वेत वर्णीय चरण}।

8 **तीर्थंकर श्री नेमिनाथ जी।** कूट पर नाम अंकित नहीं है क्योंकि ऊर्जयन्त पर्वत से मोक्ष सिधारे। {श्वेत वर्णीय चरण}।

9 **तेईसवें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ जी :** स्वर्णभद्र कूट { श्याम वर्णीय चरण }।

हमने श्री सम्मेदशिखर जी की अपनी त्रि पड़ाव वन्दना, सानन्द / निर्विघ्न सम्पन्न की। आशा है, सभी यात्रियों को इस छोटी सी यात्रा में बहुत आनन्द की अनुभूति अवश्य हुई होगी। तो अब देर किस बात की है ???

शीघ्रातिशीघ्र अपनी डायरी व पैन निकालिये व अपनी डायरी रुपी कैमरे में सब कैद कर लीजिये ताकि याद करने में आसानी हो। आप सभी यात्रियों की आज की मङ्गलमय यात्रा पूर्ण होने की अशेष शुभकामनायें।

ध्यान देने योग्य बिन्दु

1–.श्री महावीर स्वामी जी एवं श्री नेमिनाथ जी : इस पर्वत से मोक्ष नहीं सिधारे हैं। इसीलिये इन कूटों पर कोई नाम अंकित नहीं हैं व इनकी कूट प्रतीक स्वरुप बनाई गई हैं। इनकी कूट पर श्वेत वर्ण के चरण अंकित हैं ।

2- . दूसरे तीर्थंकर : श्री अजितनाथ जी की कूट पर श्वेत वर्णीय चरण हैं। श्री अजितनाथ जी सम्मेद शिखर से मोक्ष जाने वाले सबसे पहले तीर्थंकर हैं। कुल तीन कूटों पर श्वेत वर्णीय चरण व छह कूटों पर श्याम वर्णीय चरण।

कूटों का क्रम तीर्थंकरो के नम्बर के हिसाब से :

15- पन्द्रहंवे तीर्थंकर श्री धर्मनाथ जी
5- पॉचवे तीर्थंकर श्री सुमति नाथ जी
16- सोलहवें तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ जी
24- चौबीसंवे तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी जी।
7- श्री सुपार्श्व नाथ जी
13- श्री विमल नाथ जी
2- श्री अजितनाथ जी
22- श्री नेमिनाथ जी
23- श्री पार्श्वनाथ जी

सुधीजन भूल सुधार कर पढ़ें।
जय जिनेन्द्र

चौबीसों तीर्थंकरों के गणधरों की कूट

"चौबीसों तीर्थंकरों के गणधरों की कूट" श्री गौतम स्वामी जीकी के विषय मे जानेंगे। यह कूट पर्वत पर समतल मैदान में अवस्थित है। पर्वत पर यह कूट सबसे प्रथम कूट है। इससे पहले कोई कूट नहीं है और इस कूट के पश्चात् सत्रहवें तीर्थंकर श्री कुन्थुनाथ जी की ज्ञानधर कूट अवस्थित है।

श्री गौतम स्वामी जी (गणधर) इस कूट से निर्वाण पद को प्राप्त नही हुये हैं। श्री गौतम गणधर जी ने विपुलाचल पर्वत, राजगिरी जी से मोक्ष पद को प्राप्त किया है। (यह शात्रोक्त कथन है । वर्तमान प्रचलनानुसार श्री गुणावा जी को इनकी निर्वाणस्थली माना जाता है। इस कूट से किन्हीं भी गणधर जी ने निर्वाण को प्राप्त नही किया है। यह कूट तो मंगलाचरण के प्रतीक स्वरुप है। इन सभी गणधरों ने ही तो अपनी सामर्थ्य से तीर्थंकर भगवन्तों की दिव्य - ध्वनि का पान कर हमें सारा ज्ञान प्रदान किया है, विभिन्न आचार्यों और परम्परा से हम सब तक पहुँचा है। इन गणधरों के अभाव में हमें धर्म मार्ग में कुछ भी सुलभ नहीं हो सकता था। इस कूट पर पैंतीस चरण - युगल अंकित हैं । जिनमें से चौंतीस चरण युगल श्वेत वर्ण के तथा एक चरण यगल श्याम वर्णीय है। इन चौंतीस चरण - युगलों में से चौबीस चरण - युगल तो चौबीस तीर्थंकरों के मुख्य गणधरों के व दस चरण युगल तेइसवें तीर्थंकर श्री पारसनाथ जी के दस गणधरों के हैं। क्योंकि श्री पार्श्वनाथ जी ही वर्तमान चौबीसी के 23 वें तीर्थंकर होने के बाद भी इस " पर्वत से मोक्ष गमन करने वाले अन्तिम तीर्थंकर हैं", इसी कारण उनके दस गणधरों के दस चरण - युगल यहाँ अंकित कर दिये गये हैं।

एक जो श्याम वर्ण के चरण युगल प्रथक रूप से निर्मित हैं वे श्री महावीर स्वामी जी के प्रथम / मुख्य गणधर श्री गौतम स्वामी जी के हैं। जैसे ही चौपड़ा कुण्ड से इस कूट पर पहुँचते हैं, हवा के ऐसे तेज़ झोंकों की अनुभूति होती है जो अंतरंग को रोमांचित कर जाते हैं और जोश व स्फूर्ति पूरे शरीर में भर जाती है, क्योकि यात्रीगण ने यहाँ अपनी यात्रा के प्रथम पड़ाव को प्राप्त कर लिया होता है। यह कूट मधुबन (तलहटी) से लगभग नौ किलोमीटर के पड़ाव को पार करके हम श्री गौतम स्वामी जी की इस कूट पर पहुँचते हैं । चौपड़ा कुण्ड से इस कूट की दूरी लगभग एक कि. मीटर हैं। इस कूट से किन्हीं तीर्थंकर या गणधर ने सिद्धत्व को प्राप्त नहीं किया है, इसीलिये इस कूट पर कोई नाम अंकित नही हैं। चौबीसों तीर्थंकरों के गणधरों की कूट की जय।

श्री गौतम गणधर जी की टोंक

श्री गौतम गणधर जी की टोंक

श्री गौतम गणधर जी की टोंक

श्री गौतम स्वामी जी की जय।

सुधीजन भूल सुधार कर पढे

35 चरण युगल किन किन के है यह कही स्पष्ट रुप से लिखित नही हैं। यह हमने याद करने के लिये, समझने के लिये लिखा हैं ।हो सकता है यह अनुमान गल्त हो सुधीजन भूल सुधार कर पढे व हमारी त्रुटियो को क्षमा करें। हमारा उद्देश्य केवल सरल रुप से समझने के लिये है।

चौबीसों तीर्थंकरों के गणधरोंकी कूट

चौबीसों जिनराज के, गण नायक है जेह।
मन वचतन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।

ॐ ह्रीं श्री गौतम स्वामी आदि गणधरदेव ग्राम के उद्यान आदि भिन्न-भिन्न स्थानों से सिद्ध भए, तिनके चरणारिवन्द को मेरा मन वचनकाय से

श्री कुन्थुनाथ जी : ज्ञानधर कूट

हम सत्रहवें तीर्थंकर श्री कुन्थुनाथ जी की जाप / वन्दना करेंगे। तीर्थंकर श्री कुन्थुनाथ जी की कूट का सम्बोधन " ज्ञानधर कूट " है। इस कूट पर श्याम वर्णीय चरण अंकित हैं। यह कूट श्री गौतम स्वामी जी वाले समतल मैदान में ही अवस्थित है। इस कूट से पूर्व श्री गौतम स्वामी जी की व इस कूट के पश्चात इक्कीसवें तीर्थकर श्री नमिनाथ जी की मित्रधर कूट अवस्थित है ।

वैसे तो ज्ञानधर कूट ही, श्री सम्मेद शिखर जी के वन्दना - पथ की पहली कूट है, क्योंकि गौतम स्वामी जी, श्री सम्मेद शिखर जी से मोक्ष नहीं सिधारे हैं । शास्त्रीय उल्लेख उतर पुराण के अनुसार श्री गौतम स्वामी जी, श्री राजगृही जी से मोक्ष पधारे हैं। वर्तमान प्रचलन के अनुसार उन्हें श्री गुणावा जी से निर्वाणोपलब्धि हुई है, ऐसा माना जाता है। गौतम स्वामी जी की कूट मंगलाचरण स्वरुप यहाँ बनाई गई हैं । जबकि वास्तव में इस कूट से कोई गणधर मोक्ष नहीं गये हैं। श्री कुन्थुनाथ जी की ज्ञानधर कूट पर ही, श्री गणेश प्रसाद वर्णी जी [जो जन्मना जैन नहीं थे] ने, प्रथम वन्दना के समय, इसी कूट पर पूजन - विधान किया था। तीर्थंकर श्री कुन्थुनाथ जी, एक हजार मुनिराजों के साथ इस ज्ञानधर कूट से निर्वाण पद को प्राप्त हुये । श्री कुन्थु नाथ जी के मोक्ष गमन के पश्चात, सबसे पहले राजा सोमधर ने चतुर्विध संघ सहित, सम्मेद शिखर जी की वंदना की।

राजा सोमधर ने ज्ञानधर कूट को प्रणाम करके, विधिवत पूजन करके, एक अरब, चौरासी करोड़ भव्य जीवो के साथ तपश्चरण करके, घातिया कर्मो को जलाकर, इसी कूट से सिद्ध पद को प्राप्त किया।

इस कूट से श्री कुन्थुनाथ जी के मोक्ष गमन के पश्चात, छियानवे कोड़ा - कोड़ी, छियानवे करोड़, बत्तीस लाख, छियानवे हजार, सात सौ बयालीस मुनि सिद्धत्व को प्राप्त हुये हैं । इस कूट की भाव सहित वन्दना करने से, एक करोड़ प्रोषध उपवास का फल मिलता है ।

जाप्य मन्त्र

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय नमः।
सुधीजन कृपया भूल सुधार कर पढ़ें।

सुधीजन भूल सुधार कर पढ़ें।
जय जिनेन्द्र

ज्ञानधर कूट

कुन्थनाथ जनिराज का, कूट ज्ञानधर जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।

ह्रीं श्री कुन्थनाथ जिन्द्रादि मुनि 96 कोड़ा कोड़ी 96 करोड़ 32 लाख 96 हजार 741 मुनि इस कूटसेसिद्ध भए। तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।। 1।।

श्री नमिनाथ जी : मित्रधर कूट

अब हम सभी इक्कीसवें तीर्थंकर श्री नमिनाथ जी की जाप व उनकी कूट की भाव वन्दना करेंगे। तीर्थंकर श्री नमिनाथ जी की कूट का सम्बोधन मित्रधर कूट है। इस कूट पर श्याम वर्णीय चरण अंकित हैं। यह कूट भी श्री गौतम स्वामी जी की कूट वाले समतल मैदान में अवस्थित है। इस कूट से पूर्व सत्रहवें तीर्थंकर श्री कुन्थु नाथ जी की व इस कूट के पश्चात् अट्ठारहवें तीर्थंकर श्री अरनाथ जी की कूट अवस्थित है, या ऐसा कह सकते हैं कि यह कूट सत्रहवें व अट्ठारहवें तीर्थंकर की कूटों के मध्य में स्थित है।

इस मित्रधर कूट से श्री नमिनाथ जी 1,000 मुनिराजों सहित मुक्त हुये हैं। श्री नमिनाथ भगवान के मोक्ष गमन के पश्चात, सबसे पहले चतुर्विध संघ सहित, मेघदत नामक राजा ने वंदना की हैं । मित्रधर कूट पर भक्तिभाव से अष्ट द्रव्य सहित पूजन की फिर इसी कूट की स्तुति करके, मुनिदीक्षा अंगीकार की व घोर तपश्चरण करके, 45 लाख अरब भव्यो के साथ, केवलज्ञान के चमत्कार से, मोक्ष सिद्धि को प्राप्त किया।

इस कूट से श्री नमिनाथ जी के मोक्ष गमन के पश्चात् नौ सौ कोड़ा - कोड़ी, पैंतालीस लाख, सात हजार, बयालीस मुनिराजों ने सिद्धत्व को प्राप्त किया है ।

इस कूट की भाव सहित वन्दना करने से एक करोड़ प्रोषध उपवास का फल प्राप्त होता है ।

जाप्य मन्त्र :ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नम:।

श्री नमिनाथ प्रभु की टोंक

मित्रधर कूट

नमिनाथ जिनराज का, कूट मित्र धर जेह ।।
मन वच तन कर पूजहूँ शिखर सम्मेद यजेह ।।

ह्रीं श्री नमिनाथ जिन्द्रादि मुनि 9 कोड़ा कोड़ी 1 अरब 45 लाख 7 हजार 942 मुनि इस कूट से सिद्ध भए जिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन कायसेबारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घं निर्व. स्वाहा ।।3।।

सुधीजन भूल सुधार कर पढ़ें।
जय जिनेन्द्र

श्री अरनाथ जी: नाटक कूट

अब हम अट्ठारहवें तीर्थंकर श्री अरनाथ जी की जाप व उनकी नाटक कूट की भाव वन्दना / आराधना करेंगे। श्री अरनाथ जी की कूट का सम्बोधन नाटक कूट है । इस कूट पर श्याम वर्णीय चरण - युगल अंकित हैं । इस कूट से पूर्व इक्कीसवें तीर्थंकर श्री नमिनाथ जी की मित्रधर कूट एवं इस कूट के पस्चात् उन्नीसवें तीर्थकर श्री मल्लिनाथ जी संवल कूट अवस्थित है। यह नाटक कूट श्री गौतम स्वामी जी वाले समतल मैदान में ही अवस्थित है ।

श्री अरनाथ जी नाटक कूट से, एक हजार मुनियो के साथ, मोक्ष को गये हैं। श्री अरनाथ जी के मोक्ष गमन के पश्चात, सबसे पहले इस कूट की संघ सहित वंदना, राजा सुप्रभ ने एक कम, एक करोड़ भव्य जीवो के साथ की हैं नाटक कूट की भाव सहित वन्दना / आराधना करने से सम्बन्धित माहात्म्य को दर्शाने वाली एक प्रासिद्ध कथा है, जिसका कथन विस्तार भय के हेतु से अति संक्षेप में करते हैं : सोलहवें स्वर्ग से च्युत हो जम्बूदीप के भरत क्षेत्र में सुरम्य नामक देश के पोदनपुर नगर में श्रीषेण नामक राजा और रानी श्रीमती जी से सुप्रभ नामक पुत्र हुआ, जो अनेक विद्याओं का ज्ञाता और अत्यन्त वैभवशाली था। समय आने पर राज सिंहासन पर आरूढ़ हुआ। उसी के राज्य काल में एक चारण ऋद्धि धारी मुनिराज पधारे। वह राजा उन मुनिराज के दर्शनार्थ पहुँचा। यथोचित पूजन / वन्दन कर उनसे विनम्रता और भक्तिपूर्वक कहा कि मुझे इस दु:ख पूर्ण संसार से छुड़ाकर मोक्ष का मार्ग बताने की महती कृपा करें। उन मुनिराज ने कहा कि श्री सम्मेदशिखर जी की यात्रा "मुक्ति का प्रधान उपाय" है और समस्त सिद्धियों को देने वाला है। मुनि वचनों से प्रभावित हो वह सुप्रभ राजा, संघ की पूजादि कर एक कम एक करोड़ भव्य जीवों के साथ श्री सम्मेदशिखर जी पर्वत पर वन्दनार्थ आया। नाटक कूट की वन्दना करके उन भव्य जीवों के साथ वहीं पर दीक्षित हो गया। दुर्द्धर तप तपकर निर्वाण को प्राप्त हुआ। नाटक कूट से श्री अरनाथ जी के मोक्ष गमन के पश्चात , " निन्यानवें करोड़, निन्यानवें लाख, निन्यानवें हजार " मुनिराज सिद्धत्व को प्राप्त हुये हैं। इस कूट की भाव सहित वन्दना करने से छयानवे करोड़ प्रोषध उपवास का फल प्राप्त होता है।

प्रोषोपवास : सप्तमी को एकासन, अष्टमी को उपवास - नवमी को एकासन / इसी प्रकार चतुर्दशी से एक दिन पूर्व एकासन, चतुर्दशी को उपवास, व चतुर्दशी से अगले दिन फिर एकासन करना प्रोषधोपवास कहलाता है।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री अरनाथ जिनेन्द्राय नम:। कृपया सुधीजन सुधार कर पढ़ें।

सुधीजन भूल सुधार कर पढ़ें।
जय जिनेन्द्र

नाटक कूट

अरहनाथ जिनराज का, नाटककूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेंद्रादि मुनि 99 करोड़ 99 लाख 99 हजार 999 मुनि नाटक कूट से सिद्ध भये, तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।।4।।

श्री मल्लिनाथ जी : संवल कूट

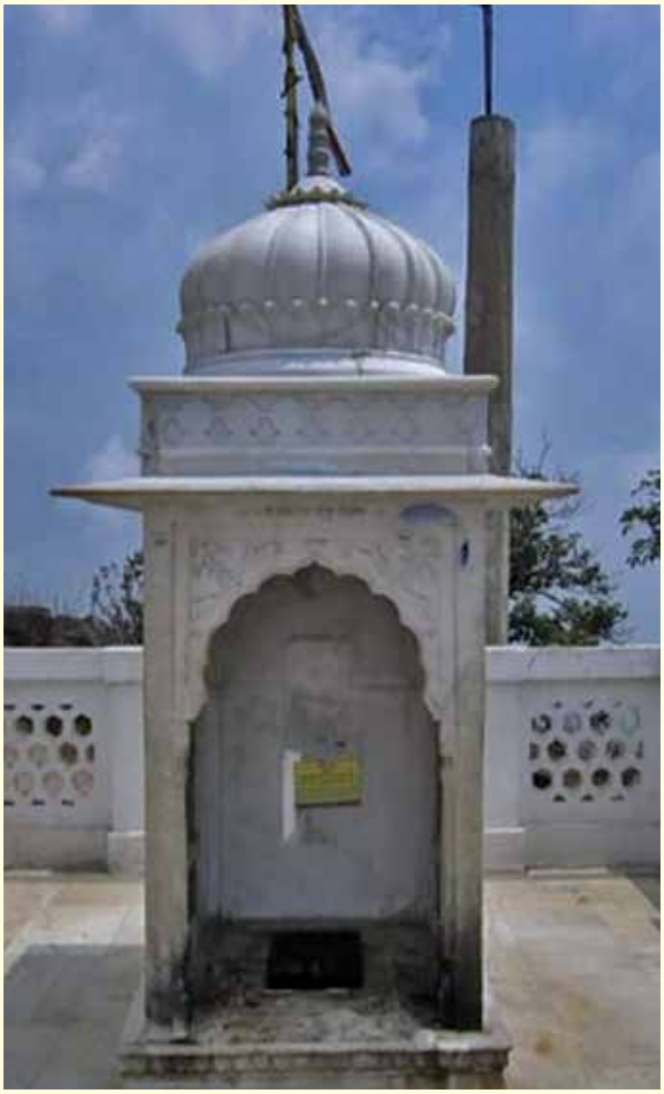

अब। हम, उन्नीसवें तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ जी की जाप व उनकी सम्बल कूट की भाव वंदना करेंगे । श्री मल्लिनाथ जी की कूट का सम्बोधन सम्बल कूट है। इस कूट पर भी श्याम वर्णीय चरण अंकित हैं । इस कूट से पूर्व अट्ठारहवें तीर्थंकर श्री अरनाथ जी की नाटक कूट व इस कूट के पश्चात् ग्यारहवें तीर्थंकर श्री श्रेयांसनाथ जी की संकुल कूट अवस्थित है।

यह कूट भी श्री गौतम स्वामी जी वाले समतल मैदान में ही स्थित है। इस सम्बल कूट से श्री मल्लिनाथ जी ने। 500 मुनिराजों सहित सिद्धत्व पद प्राप्त किया ।

श्री मल्लिनाथ जी के मोक्ष गमन के पश्चात, सबसे पहले राजा तत्वसेन ने, अनेक भव्य राजाऔ के साथ इस सम्बल कूट की वंदना की हैं। राजा तत्वसेन ने 99 करोड़ भव्य जीवो के साथ, दीक्षा लेकर, इसी पर्वत पर कठोर तपश्चरण करके, घातिया कर्मो को नष्ट किया व मोक्ष पद को प्राप्त किया । इस सम्बल कूट से श्री मल्लिनाथ जी के मोक्ष गमन के पश्चात, छियानवे करोड़ मुनि सिद्धत्व पद। को प्राप्त हुये हैं । इस कूट की भाव सहित वंदना करने से छियानवें करोड़ प्रोषधोपवास का फल प्राप्त होता हैं।

जाप्य मंत्र :

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नम:।

विशेष :

१. श्री सम्मेदशिखर जी पर्वत पर मात्र चार कूट ही ऐसी हैं जो चौबीस तीर्थंकरों के क्रम में ही अवस्थित हैं :-

अठारहवें तीर्थंकर श्री अरनाथ जी और उनके पश्चात् उन्नीसवें तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ जी।

२. बाइसवें तीर्थंकर श्री नेमिनाथ जी और उनके पश्चात् तेईसवें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ जी।

संवल कूट

मल्लिनाथ जिनराज का, संवल कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह ।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेंद्रादि मुनि 96 करोड़ मुनि इस कूट से सिद्ध भये,तिनके चरणारविन्द को मेरा मन,वच,काय से बारम्बार नमस्कार हो,जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।। 4।।

सुधीजन भूल सुधार कर पढ़ें।
जय जिनेन्द्र

श्री श्रेयांसनाथ जी संकुल कूट

अब हम ग्यारहवें तीर्थंकर श्री श्रेयांसनाथ जी की जाप व उनकी संकुल कूट की भाव वन्दना करेंगे।तीर्थंकर श्री श्रेयांसनाथ जी की कूट का सम्बोधन "संकुल कूट" है। इस कूट पर श्यामवर्णीय चरण अंकित हैं। यह कूट श्री गौतम स्वामी जी की कूट वाले समतल मैदान में ही स्थित है। इस कूट से पहले उन्नीसवें तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ जी की संवल कूट व इस कूट के बाद नौवें तीर्थंकर श्री पुष्पदन्त जी की सुप्रभ कूट अवस्थित है।

श्री श्रेयांस नाथ जी एक हजार मुनियो के साथ, इस संकुल कूट से सिद्धालय को प्राप्त हुये श्री श्रेयांसनाथ जी के मोक्ष गमन के पश्चात, नंदिषेण नामक राजा ने सम्मेदाचल की वंदना की हैं।

मुनिराज से मोक्ष प्राप्ति का उपाय पूछने पर, मुनिराज ने बताया कि यदि मोक्ष चाहते हो तो सम्मेदाचल की यात्रा करिये। राजा नंदिषेण ने सम्मेदाचल पर्वत पर जाकर, संकुल कूट को श्रेष्ट प्रणाम किया व एक करोड़ भव्यो के साथ, दीक्षित हो गये। तपश्चरण से सारे कर्मो को दग्ध करके, मुक्ति को प्राप्त कर लिया। एक करोड़ प्रोषधोपवास का जो फल संकुल कूट के दर्शन से अनायास ही मनुष्य प्राप्त कर लेता हैं तो फिर संपूर्ण कूटों की वंदना से प्राप्त होने वाले फल का वर्णन कौन कर सकता हैं?

इस संकुल कूट से , छियानवे कोड़ाकोड़ी, छियानवे करोड़, छियानवे लाख, नौ हजार पाँच सौ बयालीस मुनि सिद्ध हुये हैं । इस कूट की भाव सहित वन्दना करने से एक करोड़ प्रोषधोपवास का फल मिलता है।

जाप्य मंत्र :

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांस नाथ जिनेन्द्राय नमः।

विशेष : आप सभी यात्री कूट की वन्दना करते समय तीर्थंकर श्री श्रेयांसनाथ जी के कल्याण कारक चरण - युगल को हृदय में बसाकर ध्यान करें।

सुधीजन भूल सुधार कर पढ़ें।
जय जिनेन्द्र

संकुल कूट

श्रेयांसनाथ जिनराज का, संकुल कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह ।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेंद्रादि मुनि 96 कोड़ा-कोड़ी 96 करोड़ 96 लाख 9 हजार 542 मुनि इस कूट से सिद्ध भये, तिनके चरणारविन्द को मेरा मन,वच,काय से बारम्बार नमस्कार हो,जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।। 5।।

श्री पुष्पदन्त जी : सुप्रभ कूट

अब हम नौवे तीर्थंकर श्री पुष्पदंत जी (श्री सुविधि नाथ जी) की जाप व उनकी सुप्रभ कूट की भाव वन्दना करेंगे।

श्री पुष्पदन्त जी की कूट का नाम सुप्रभ कूट है। इस सुप्रभ कूट पर श्वेत वर्ण के चरण अंकित हैं। इस कूट से पूर्व श्री श्रेयांस नाथ जी की संकुल कूट एवं इस कूट के पश्चात् छठे तीर्थंकर श्री पद्म प्रभ जी की मोहन कूट अवस्थित है।

इस कूट की विशेषता यह है कि यह कूट चारों ओरसे खुली हुई है। और इस कूट से ही सर्वाधिक कूटोऔर इस कूट से ही सर्वाधिक कूटो के दर्शन होते हैं। यह कूट बहुत ऊची कूंट हैं । मधुबन तलहटी में, दिगम्बर धर्मशाला व श्वेताबंर धर्मशाला में स्थित जिनालय में मूलनायक भगवान श्री पुष्पदंत जी ही हैं।

इस कूट से श्री पुष्पदन्त जी के मोक्ष गमन के पश्चात, निन्यानवें करोड़, नब्बे लाख, सात हजार, चार सौ अस्सी मुनिराजों ने सिद्धत्व पद को प्राप्त किया।

इस कूट की भाव सहित वन्दना करने से एक करोड़ उपवास का फल प्राप्त होता है।

जाप्य मन्त्र :-

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय नमः।

सुधीजन भूल सुधार कर पढ़ें।
जय जिनेन्द्र

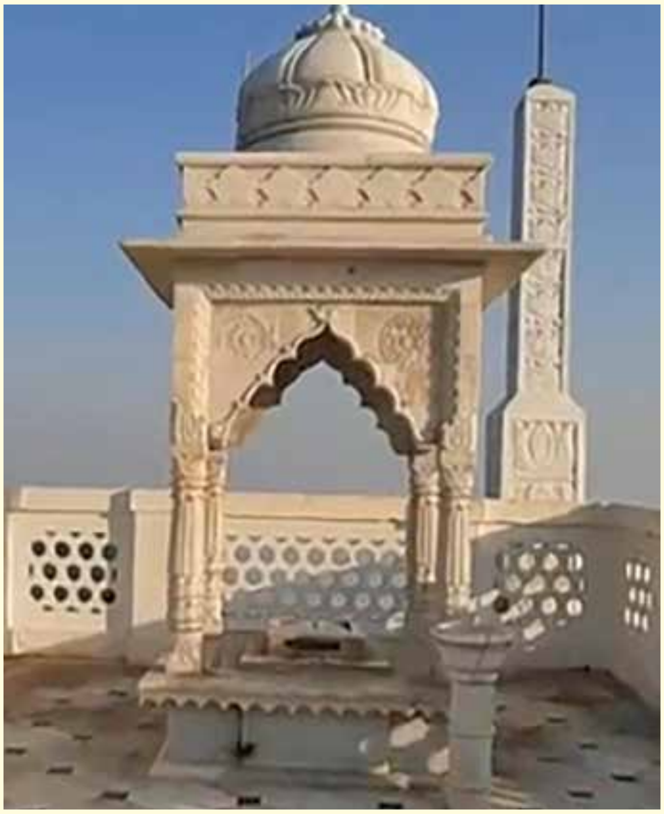

सुप्रभ कूट

पुष्पदंत जिनराज का, सुप्रभ कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंत जिनेंद्रादि मुनि 1 कोड़ा-कोडी 99 लाख 7 हजार 780 मुनि इस कूट से सिद्ध भये,तिनके चरणारविन्द को मेरा मन,वच,काय से बारम्बार नमस्कार हो,जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।।6।।

श्री पद्मप्रभ जी : मोहन कूट

अब हम छठे तीर्थंकर श्री पद्मप्रभ जी की जाप व मोहन कूट की भाव वन्दना करेंगे। श्री पद्मप्रभ जी की कूट का नाम मोहन कूट है। श्री पद्मप्रभ जी की मोहन कूट पर श्याम वर्ण के चरण अवस्थित हैं। इस मोहन कूट से पूर्व नोंवे तीर्थंकर श्री पुष्पदन्त जी की सुप्रभ कूट व इस मोहन कूट के पश्चात् बीसवें तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत नाथ जी की निर्जर कूट अवस्थित है। पर्वत पर यह एकमात्र कूट है जो तीन तरफ से खुली हुई हैं। इस मोहन कूट से श्री पद्मप्रभ जी के मोक्ष गमन के पश्चात, 99 करोड़, 84 लाख, 42 हजार, 727 मुनिराजों ने सिद्धत्व पद को प्राप्त किया हैं। मोहन कूट की भाव सहित वन्दना करने से एक करोड़प्रोषध उपवास का फल प्राप्त होता है।

जाप्य मन्त्र :

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नम :।

विशेष

आज की मोहन कूट की वंदना में विशेष बात यह ध्यान रखनी है कि इस कूट पर भी श्याम वर्ण के चरण है और यह कूट तीन दिशाऔ में खुली है यानि चरणो पर प्रक्षालन तीन तरफ से कर सकते है केवल पीछे से ही कूट बंद है। आप पिक में बहुत ध्यान से देखना कि कूट तीन तरफ से खुली हुई है श्री पद्मप्रभ जी की इस कूट का नाम मोहन कूट हैं। यह जानकारी आपको याद भी करते जाना है ।

मोहन कूट

पद्मप्रभ जिनराज का, मोहन कूट है जेह
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह ॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ जिनेंद्रादि मुनि 99 करोड़ 87 लाख 43 हजार 757 मुनि इस कूट से सिद्ध भये,तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।।7।।

सुधीजन भूल सुधार कर पढ़ें।
जय जिनेन्द्र

श्री मुनिसुव्रत नाथ : निर्जर कूट

अब हम बीसवें तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत नाथ जी की जाप व उनकी कूट की भाव सहित वन्दना करेंगे । श्री मुनिसुव्रत नाथ जी की कूट का नाम निर्जर कूट हैं। इस कूट पर श्याम वर्णीय चरण अंकित हैं। इस कूट के पूर्व छठे तीर्थंकर श्री पद्मप्रभ जी की मोहन कूट व बाद में आठवें तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभ जी की ललित कूट अवस्थित है। इस निर्जर कूट से श्री मुनिसुव्रत जी सहित, एक हजार मुनिराजों ने सिद्धत्व पद को प्राप्त किया हैं। श्री मुनिसुव्रत नाथ जी के मोक्ष गमन के पस्चात श्री रामचन्द्र जी ने संघ सहित, सबसे पहले इस कूट की वंदना की हैं ।

तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत जी के निर्वाण का समाचार, चारण ऋद्धिधारी मुनिराजों से सुनकर राजा श्री राम तुरत ही भगवान की पूजन करने चल दिये । अठारह अक्षौहिणी सेना सहित, निर्जर कूट पर पहुंचकर , अष्ट द्रव्यो से निर्जर कूट की पूजन की। । निर्जर कूट की पूजन करके राजा रामचन्द्र कीर्ति के सागर अत्यधिक विख्यात हुये । एक करोड़ पैतांलिस लाख, कहे गये सहस्त्रबाहू आदि भाग्यशाली भव्य याद रखे गये जिन्होने मुनिदीक्षा को ग्रहण करके, दारुण तपश्चरण करके, निर्जर कूट से सुयिद्धपद पाकर मुक्त हो गये। इस कूट के ठीक पीछे स्थित एक शिला पर आचार्य भगवन्त श्री विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावी, आज्ञानुवर्ती शिष्य : मुनि श्री प्रणम्यसागर जी मुनिराज ने, लगभग दो घण्टे तक अद्‌भुत ध्यान लगाया था। विशेष बात यह है कि उन्होंने शिलापट्ट के बीच में ध्यान का आसन नहीं लगाया वरन् शिला के "एकदम" किनारे पर आसन लगाया : ऐसा स्थान कि अगर तनिक भी विपरीत हिलन - डुलन हो जाय (शारीरिक) तो क्या स्थिति निर्मित होगी, कल्पना से परे है। हम जैसे साधारण मनुष्यों के लिये तो यह सोचना भी दुष्कर और सिहरन पैदा करने वाला है। इस कूट से एक मार्ग सीधा जलमन्दिर को भी जाता है। इस कूट से श्री चन्द्रप्रभ जी की ललित कूट की दूरी, लगभग दो किलोमीटर है। यह दूरी, पर्वत पर स्थित समस्त कूटों में किन्हीं दो कूटों के बीच की अधिकतम दूरी है। इस कूट से श्री मुनिसुव्रत नाथ जी के मोक्ष गमन के पश्चात, नो करोड़, चार लाख, तीस हजार मुनिराजों ने सिद्धत्व पद को प्राप्त किया। इस कूट की भाव सहित वन्दना करने से एक करोड़ प्रोषध उपवास का फल प्राप्त होता है ।

जाप्य मन्त्र :

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत नाथ जिनेन्द्राय नमः।

सुधीजन भूल सुधार कर पढ़ें।

जय जिनेन्द्र

निरजन कूट

मुनिसुव्रत जिनराज का, निरजर कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेंद्रादि मुनि 99 कोड़ा कोडी 99 करोड़ 99 लाख 999 मुनि इस कूट से सिद्ध भये, तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।।8।।

श्री चन्द्रप्रभ जी: ललित कूट

अब हम आठवें तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभ जी की जाप व उनकी ललित कूट की भाव वन्दना करेंगे। श्री चन्द्रप्रभ जी की कूट का नाम ललित कूट है। इस ललित कूट पर श्याम वर्णीय चरण अंकित हैं। इस कूट से पूर्व बीसवें तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत नाथ जी की निर्जर कूट व इस कूट के पश्चात् प्रथम तीर्थंकर श्री आदिनाथ जी की कूट अवस्थित है। श्री मुनिसुव्रत नाथ जी की निर्जर कूट से श्री चन्द्रप्रभ जी की ललितकूट की दूरी लगभग दो (2) किलोमीटर की है। सभी कूटों में किन्हीं दो कूटों के मध्य की दूरी की अपेक्षा, एकमात्र यही कूट है जिसकी दूरी सबसे ज्यादा है।

फिर भी इस कूट की वन्दना करने में थकान का अनुभव / आभास नहीं होता क्योंकि रास्ता सीधा है। चढ़ाई व उतराई का बैलेंस बना हुआ है। इस कूट की वन्दना करते समय रास्ता सुनसान होने की वजह से थोड़ा लूटपाट का डर बना रहता है। इसलिये सुबह 11 बजे तक यात्रीगण इस कूट की वन्दना कर लेते हैं ताकि सुरक्षित भी वापिस लौट सकें। इस कूट की विशेषता है कि अधिकतर चन्द्रमा इसी ललित कूट के ऊपर नजर आता है। यह कूट बहुत ऊँची कूट है। सभी कूटों में केवल तीन ही कूटसर्वाधिक ऊँची हैं । एक श्री पारसनाथ जी की "स्वर्णभद्र कूट" व दूसरी श्री चन्द्रप्रभ भगवान जी की ललितकूट व तीसरी श्री पुष्पदंत जी की सुप्रभ कूट इस कूट के विषय में {चंपापुर के पंडित से प्राप्त जानकारी के अनुसार }, चंपापुर से एक सुरंग के माध्यम से रास्ता {सुरंग } जाता है जो सीधा श्री चन्द्रप्रभ जी ललित कूट पर पहुंचता है। चंपापुर के राजा, अक्सर इसी सुरंग के माध्यम से सीधे श्री चन्द्रप्रभ जी की ललितकूट की वन्दना करने के हेतु से अक्सर आते थे। इस तथ्य की सत्यता के विषय में नही मालूम हैं। इस कूट में दो परिक्रमा हैं। एक परिक्रमा बाहरी परिसर से है व एक परिक्रमा अन्दर से चरणों की है। इस कूट की भाव सहित वन्दना करने से, 16, प्रोषध उपवास का फल प्राप्त होता है। इस कूट से श्री चन्द्रप्रभ जी के बाद चार अरब, बहत्तर करोड़, अस्सी लाख, चौरासी हजार, पाँच सौ पचपन मुनिराजों ने सिद्धत्व पद को प्राप्त किया है।

जाप्य मन्त्र: ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नम:।

आप ललित कूट के चरण युगल का ध्यान लगाकर जाप कर सकते हैं। या फिर चन्द्रपुरी जो कि कल्याणक भूमि हैं वहॉं का ध्यान लगा सकते हैं। आप सोनागिर जी का भी ध्यान लगाकर जाप कर सकते हैं।

ध्यान देने योग्य : अलग अलग ग्रन्थो में कूटों से मोक्ष जाने वाली संख्या व उपवास का फल यह संख्या अलग अलग दी हुई हैं। हमने सम्मेद शिखर महात्मय को आधार मानकर, इसमें संख्या लिखी हैं। जो प्रामाणिक मानी जाती हैं। फिर भी हो सकता है कि वह संख्या पूर्णतया सही न हो लेकिन वास्तव में हमें इन संख्या व उपवास के फल व मोक्ष गमन वाली संख्या इस विषय में उलझना नही हैं हमारा उद्देश्य केवल अपनी विशुद्धि बढाने का हैं जितनी विशुद्धि से हम भाव वंदना करेंगे, उतनी विशुद्धि बढेगी।

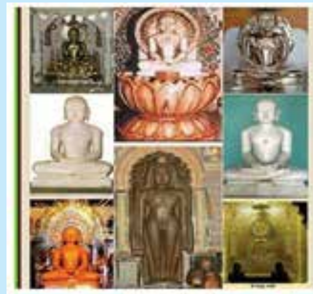

ललित कूट

चन्द्रप्रभ जिनराज का, ललित कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेंद्रादि मुनि 984 अरब,12 करोड़, 80 लाख,84 हजार 555 मुनि इस कूट से सिद्ध भये,तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो,जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।।9 ।।

सुधीजन भूल सुधार कर पढ़ें।

जय जिनेन्द्र

श्री आदिनाथ जी : श्री अष्टापद जी (कैलाशपर्वत)

अब हम प्रथम तीर्थंकर श्री आदिनाथ जी की जाप व उनकी कूट की विन्दना करेंगे। श्री आदिनाथ जी की कूट पर कोई नाम अंकित नही है, क्योकि श्री आदिनाथ जी ने श्री अष्टापद जी (कैलाश पर्वत) से सिद्धत्व प्राप्त किया है, श्री सम्मेदशिखर जी से नही किया है। इसी कारण यहाँ पर यह कूट केवल प्रतीक स्वरुप बनाई गई है। यहाँ पर श्वेत वर्ण के चरण स्थापित हैं। चूँकि तीर्थंकर श्री आदिनाथ जी की अवगाहना, वर्तमान कालीन चौबींस तीर्थंकरों मे सर्वाधिक थी, इसी के कारण इनके चरण भी इस कूट पर सबसे अधिक बड़े बनाये गये हैं। यही एकमात्र कूट है जिस पर उन तीर्थंकर का चिन्ह्व (बैल) भी अंकित किया गया है। इस कूट पर चरणों के आगे बैल भी बना हुआ है।

इस कूट से पूर्व आठवे तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभ जी की ललित कूट अवस्थित है। इस कूट के पश्चात् दसवें तीर्थंकर श्री शीतलनाथ जी की विधुतवर कूट कूट अवस्थित है। श्री आदिनाथ जी सहित, दस हजार मुनिराजों ने कैलाश पर्वत से सिद्ध पद को प्राप्त किया है। आपको इस कूट या फिर कैलाश पर्वत, जहाँ पर भी अधिक भाव लगें वहाॅ का ध्यान लगाकर जाप करनी हैं।

जाप्य मन्त्र :

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

सुधीजन भूल सुधार कर पढ़ें।
जय जिनेन्द्र

आदिनाथ जिनराज की टोंक
ऋषभदेव जिन सिद्ध भये, गिरी कैलाश से जोय।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह॥
ॐ ह्रीं श्रीऋषभनाथ जिनेंद्रादि 10 हजार मुनि कैलाश पर्वत से सिद्ध भये,तिनके चरणारविन्द को मेरा मन,वच,काय से बारम्बार नमस्कार हो,जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।।10।।

श्री शीतलनाथ जी विद्युतवर कूट

अब हम दसवें तीर्थंकर श्री शीतलनाथ जी की जाप व उनकी विद्युतवर कूट की भाव वन्दना करेंगे। श्री शीतलनाथ जी की कूट का नाम विद्युतवर कूट है। इस कूट पर श्याम वर्ण के चरण अङ्कित हैं। यह कूट तीर्थंकर श्री आदिनाथ जी की कूट के पश्चात् एवं चौदहवें तीर्थंकर श्री अनन्तनाथ जी की स्वयंभूवर कूट से पहले स्थित है। विधुतवर कूट से श्री शीतलनाथ जी सहित एक हजार मुनिराजों ने मोक्ष पद को प्राप्त किया । इस कूट से श्री शीतलनाथ जी के मोक्ष गमन के पश्चात अट्ठारह कोड़ाकोड़ी, बयालीस करोड़, बत्तीस लाख, बयालीस हजार, नौ सौ पाँच मुनिराजों ने सिद्धत्व पद प्राप्त किया है । इस कूट की भाव सहित वन्दना करने से एक करोड़ उपवास का फल मिलता है।

तीर्थंकर श्री शीतलनाथ जी के मोक्ष गमन के पश्चात, अविचल नामक राजा ने विशाल चतुर्विध संघ को चलाया । अविचल राजा के मन में सम्मेदाचल पर्वत की भक्ति उत्पन्न हो गई । उस अविचल राजा ने 32 लाख मनुष्यो के साथ, सम्मेदाचल की यात्रा की। विधुतवर कूट की वंदना की, पूजन की व 16 लाख भव्य जीवो के साथ जैनेश्वरी दीक्षा धारण कर, शुक्लध्यान रुपी अग्नि से, सारे कर्म समूह को जलाकर, समयक्त्व आदि गुणो से विभूषित होकर शाश्वत सिद्ध पद प्राप्त किया ।

जाप्य मन्त्र :

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नम:

आप, आज की जाप / वन्दना विद्युतवर कूट पर अङ्कित चरण - युगल को हृदयस्थ करके करिये। या फिर श्री शीतलनाथ जी की चार कल्याणक की भूमि विदिशा के भगवान जी को ध्यान में लाकर भी कर सकते हैं ।

सुधीजन भूल सुधार कर पढ़ें।
जय जिनेन्द्र

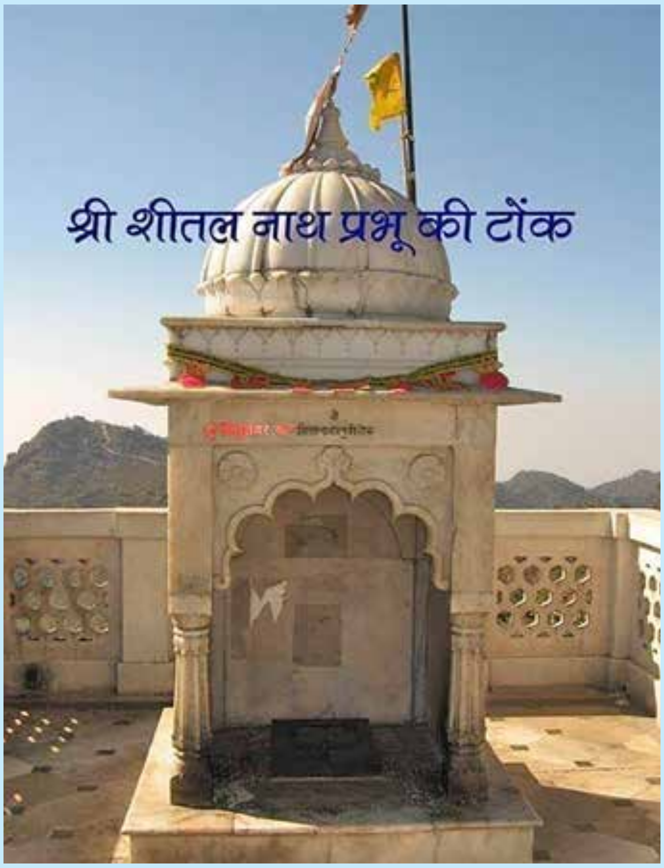

विद्युत वर कूट

शीतलनाथ जिनराज का, कूट विद्युतवर जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेंद्रादि मुनि 18 कोड़ा कोड़ी 42 करोड़ 32 लाख 42 हजार 905 मुनि इस कूट से सिद्ध भये,तिनके चरणारविन्द को मेरा मन,वच,काय से बारम्बार नमस्कार हो,जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।।11।।

श्री अनंतनाथ जी : स्वयंभू वर कूट

अब हम चौदहवें तीर्थंकर श्री अनंतनाथ जी की जाप व उनकी स्वयंभू कूट की भाव वंदना करेंगे । तीर्थंकर श्री अनंतनाथ जी की कूट का नाम स्वयंभू वर कूट है। इस स्वयंभू कूट पर श्याम वर्ण के चरण अंकित हैं। इस कूट के पूर्व दसवें तीर्थंकर "श्री शीतल नाथ जी " की विद्युतवर कूट अवस्थित है। व इस कूट के पश्चात तीसरे तीर्थंकर श्री संभवनाथ जी की धवल कूटअवस्थित है । इस कूट की परिक्रमा लगाते भी बहुत सी कूटों के दर्शन होते हैं । स्वयंभू कूट पर माघ कृष्ण द्वादशी के दिन, श्रीअनंतनाथ है जी ने, 6,000 मुनिराजों के साथ मुक्तिपद को प्राप्त किया ।

इस कूट से तीर्थंकर श्री अनंतनाथ जी के मोक्षगमन पश्चात्, नब्बे कोड़ा कोड़ी, सत्तर करोड़, सत्तर लाख, सात हजार, सात सौ मुनिराजों ने इस कूट से सिद्धत्व को प्राप्त किया है। श्री अनंतनाथ भगवान के मोक्ष गमन के पश्चात, सबसे पहले। चारुसेन नामक राजा ने, सम्मेद शिखर जी की यात्रा के लिये संघ संचालित किया । और राजा चारुसेन सम्मेद शिखर की वंदना करके, वैराग्य को प्राप्त होकर जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण की। स्वयंभू नामक कूट पर, एक अरब चौरासी करोड़ मुनिराजों के साथ, मोक्ष पद प्राप्त करके भव से मुक्त हुये

{ कथा विस्तार लिये हुये हैं। समझने के लिये, छोटे रुप में बताया हैं } इस कूट की भाव सहित वंदना करने से एक करोड़ प्रोषध उपवास का फल प्राप्त होता है।

जाप्य मंत्र :

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय नमः।

सुधीजन कृपया भूल सुधार कर पढ़ें।

स्वयंभु कूट

अनन्तनाथ जिनराज का, कूट स्वयंभु वर जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।

ह्रीं श्री अनन्तनाथजिनेन्द्रादि मुनि 96 कोड़ा कोड़ी 70 करोड़ 70 लाख 70 हजार 700 मुनि इस कूट से सिद्ध भए, तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।। 12।।

सुधीजन भूल सुधार कर पढ़ें।
जय जिनेन्द्र

श्री सम्भवनाथ जी : दत्त धवल कूट

अब हम तृतीय तीर्थंकर श्री सम्भवनाथ जी की जाप व उनकी कूट की वन्दना करेंगे। यहाँ पर श्वेत वर्ण के चरण - युगल अंकित हैं। इस कूट से पूर्व चौदहवें तीर्थंकर श्री अनन्तनाथ जी की कूट "स्वयंभुवर कूट" अवस्थित है। इस कूट के पश्चात् बारहवें तीर्थंकर श्री वासुपूज्य जी की कूट अवस्थित है।

तीर्थंकर श्री सम्भवनाथ जी सहित, नौ कोड़ा - कोड़ी, बहत्तर लाख, सात हजार, पॉच सौ बयालिस। मुनिराजों ने यहाँ से सिद्ध पद को प्राप्त किया है।

आपको इस कूट के चरण को ध्यान में लाकर या फिर श्री संभवनाथ जी के कल्याणक स्थली श्रावस्ती का ध्यान लगाकर जाप कर सकते है। ।

जाप्य मन्त्र :

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमः।

श्री सम्मेदाचल जी से, वर्तमान चौबीसी में मोक्ष जाने वाले द्वितीय तीर्थंकर श्री सम्भवनाथ जी ही हैं। राजा हेमदत व रानी जयसेना के कोई पुत्र नही था। उन्होने दो चारण ऋद्धिधारी मुनिराज से अपनी व्यथा बताई। मुनिराज ने बताया कि सम्मेद शिखर की तीर्थ यात्रा करने पर पुत्र रत्न की प्राप्ति होगी। राजा ने एक करोड़ मनुष्यो को साथ लेकर, लाल वस्त्र धारण करके, पर्वत की वंदना की व तीन प्रदक्षिणा दी। उस प्रभाव से उनके यहॉ रत्नदत्त नामक पुत्र रत्न की प्राप्ति हुंई। और उन्ही के वंश में मधवा चक्रवर्ती भी उत्पन्न हुये मधवा चक्रवर्ती ने भी 32 लाख मनुष्यो के साथ इस पर्वत की शुभ व मंगलकारी यात्रा की।

इस कूट की भाव सहित वन्दना करने पर 42 लाख प्रोषधोपवास के फल की प्राप्ति होती है।

धवल कूट

सम्भवनाथ जिनराज का, धवल कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्भवनाथ जिनेंद्रादि मुनि 9 कोड़ा कोड़ी 12 लाख 7 हजार 542 मुनि इस कूट से सिद्ध भये, तिनके चरणारविन्द को मेरा मन,वच,काय से बारम्बार नमस्कार हो,जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।।14।।

सुधीजन भूल सुधार कर पढ़ें।
जय जिनेन्द्र

श्री वासुपूज्य जी : चंपापुर मोक्ष

अब हम बारहवें तीर्थंकर श्री वासुपूज्य जी की जाप व उनकी कूट की भाव वन्दना करेंगे। तीर्थंकर श्री वासुपूज्य जी, श्री सम्मेद शिखर जी से निर्वाण को प्राप्त नहीं हुये हैं । तीर्थंकर श्री वासुपूज्य जी, श्री चम्पापुर जी के मंदारगिरि से निर्वाण को प्राप्त हुये हैं ।

कृपया ध्यान देवें : प्रवर्तमान हुण्डावसर्पिणी काल - दोष के कारण ऐसा हुआ। श्री सम्मेद शिखर जी शाश्वत सिद्ध भूमि है। सदाकाल चौबीसों तीर्थंकर, श्री सम्मेद शिखर जी से ही मोक्ष जाते हैं। और भविष्य में भी श्री सम्मेद शिखर जी से ही मोक्ष जायेंगे। इसीलिये प्रतीक स्वरुप, शिखर जी में श्री वासुपूज्य भगवान जी की टोंक निर्मित की हुई है। इस कूट से पूर्व तीसरे तीर्थंकर श्री संभवनाथ जी की धवल कूट एवं इस कूट के पश्चात् चतुर्थ तीर्थंकर श्री अभिनन्दन नाथ जी की आनंद कूट स्थित है। इस कूट पर कोई नाम अंकित नहीं है। कूट पर श्वेत वर्ण के पाँच चरण - युगल अंकित हैं। पाँच चरण युगल इस तथ्य के प्रतीक स्वरूप अंकित हैं, क्योंकि श्री वासुपूज्य जी के समस्त कल्याणक श्री चंपापुर जी में ही सम्पन्न हुए हैं। श्री मंदारगिरि जी से निर्वाण को प्राप्त हुये हैं। यह श्री चंपापुर जी के अन्तर्गत ही आता है।

विशेष : श्री चंपापुर जी से एक सुरंग या गुप्त रास्ता निकलता है जो सीधा श्री चन्द्रप्रभ जी की ललितकूट तक पहुँचता है। यह किंवदन्ती है कि जब भी श्री चंपापुर जी के नरेश को,श्री सम्मेद शिखर जी की ललितकूट की वंदना के भाव होते थे तो वे सीधा सुरंग के माध्यम से ललितकूट पहुँच कर वंदना करते थे। आज आप श्री चंपापुर जी का ध्यान लगाकर वहाँ की वंदना करके श्री मंदारगिरि पर्वत पर पहुँचकर जाप कर सकते हैं । अथवा श्री सम्मेदशिखर जी स्थित सम्बन्धित कूट पर जाप कर सकते हैं । आपका जैसा / जहाँ ध्यान लगे, आप वैसा कर सकते हैं। श्री वासुपूज्य जी सहित एक हजार मुनि श्री चंपापुर जी के मंदारगिरि पर्वत से सिद्धत्व को प्राप्त हुये हैं ।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः।

वासुपूज्य जिनराज की टोंक

वासुपूज्य जिन सिद्ध भये, चम्पापुर से जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यनाथ जिनेंद्रादि चम्पापुर मन्दारगिरी से 1 हजार मुनि सिद्ध भये,तिनके चरणारविन्द को मेरा मन,वच,काय से बारम्बार नमस्कार हो,जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।। 15।।

सुधीजन भूल सुधार कर पढ़ें।
जय जिनेन्द्र

श्री अभिनन्दन नाथ जी : आनन्द कूट

अब हम चतुर्थ तीर्थंकर श्री अभिनन्दन नाथ जी की जाप व उनकी कूट की वन्दना करेंगे। यहाँ पर श्याम वर्णीय चरण - युगल अंकित हैं। इस कूट से पूर्व बारहवें तीर्थंकर श्री वासुपूज्य जी की कूट अवस्थित है। इस कूट के पश्चात् पन्द्रहवें तीर्थंकर श्री धर्मनाथ जी की कूट अवस्थित है। श्री अभिनंदन नाथ जी ने एक हजार मुनिराज के साथ इस कूट से निर्वाण पद को प्राप्त किया इस कूट से तिहतर कोड़ा - कोड़ी, सत्तर करोड़, सत्तर लाख, ब्यालिस हजार, सात सौ पॉच मुनिराजों ने आनंद कूट पर विराजमान होकर सिद्धत्व पद को प्राप्त किया है

जाप्य मन्त्र :

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दन नाथ जिनेन्द्राय नमः।

इस कूट की भाव सहित वन्दना करने पर सोलह लाख उपवास के फल की प्राप्ति होती है।

अतिरिक्त जानकारी

विजयभद्र नामक राजा ने सिंहसेन नामक मुनिराज से पूछा हे मुनिराज, "सम्मेद शिखर उत्तम पर्वतराज है।, उस शैलराज की वंदना करने की अत्यधिक उत्कृष्ट भावना मेरे मन में सदैव विद्यमान रहती हैं । उस सम्मेद पर्वतराज की मुझे यात्रा होगी भी या नही" ??? मुनिराज के बताने पर कि अवश्य होगी क्योकि आप भव्य जीव हैं । राजा विजयभद्र के सम्मेद शिखर की तीर्थ यात्रा वाली बात सर्वत्र फैल गई। जिसे सुनकर एक अन्य अभव्य राजा के मन में भी तीर्थयात्रा के भाव उत्पन्न हुये व उसने भी यात्रा प्रारंभ कर दी। राजा विजयभद्र चतुर्विध संघ के साथ, सम्मेद शिकर सिद्ध क्षेत्र की वंदना के लिये चल दिया। दूसरी और। वह अभव्य राजा भी सिद्ध क्षेत्र की वंदना का लक्ष्य लेकर निकला किंतु स्वप्न में अपने पुत्रो को मरा हुआ देखकर, मोह के कारण, बिना यात्रा किये ही, वापिस लौट आया। और इधर राजा विजयभद्र ने संघ सहित, विधि विधान से तीर्थयात्रा पूर्ण की।

अभव्य जीव के लिये, सम्मेद शिखर की तीर्थयात्रा नही मानी गई। शुभ यात्रा को करने के पात्र भव्य जीव ही हैं।

आनंद कूट

अभिनन्दन जिनराज का, आनन्द कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह ॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ जिनेंद्रादि मुनि 73 कोड़ा कोड़ी 70 करोड़ 70 लाख 42 हजार 705 मुनि इस कूट से सिद्ध भये, तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।।16।।

सुधीजन भूल सुधार कर पढ़ें।
जय जिनेन्द्र

श्री धर्मनाथ जी : सुदत्तवर कूट

अब। हम पन्द्रहवे तीर्थंकर श्री धर्मनाथ जी की जाप व उनकी सुदत्त वर कूट की भाव वंदना करेंगे।तीर्थंकर श्री धर्मनाथ जी की कूट का सम्बोधन सुदत्तवर कूट है । इस कूट पर श्याम वर्णीय चरण अंकित हैं । यह कूट भी श्री गौतम गणधर वाले मैदान में ही अवस्थित है। श्री गौतम गणधर जी की कूट से दाहिने तरफ या अन्य कथन से उसके ठीक पीछे अवस्थित है । इस कूट से पूर्व, चौथे तीर्थंकर श्री अभिनन्दन नाथ जी की आनन्द कूट व इस कूट के पश्चात् पाँचवे तीर्थंकर श्री सुमतिनाथ जी की अविचल कूट स्थित है । यानि हम कह सकते हैं कि यह कूट चौथे व पाँचवे तीर्थंकर की कूटों के बीच में अवस्थित है।

इस कूट की वन्दना करने के लिये जल मन्दिर से सीधी खड़ी चढ़ाई चढ़ना पड़ती है। जिसमे थोड़ी थकान महसूस होने लगती है। या हम ऐसा कह सकते हैं कि सम्पूर्ण वन्दना क्रम में सबसे कठिन चढ़ाईयों में एक यहाँ पर महसूस होती है। लेकिन जैसे - जैसे जयकारा लगाते जाते हैं, वैसे - वैसे थकान कम महसूस होती है। तीर्थंकर श्री धर्मनाथ जी ने इस सुदत्तवर कूट से, 1,000 मुनिराजों के साथ सिद्ध पद को प्राप्त किया। तीर्थंकर श्री धर्मनाथ जी के मोक्ष गमन के पश्चात, सबसे पहले भावदत्त नामक राजा ने 33 करोड़ भव्य जीवो के साथ इस कूट की वंदना की व इस कूट से संसार बंधन से मुक्त हुये

तीर्थंकर श्री धर्मनाथ जी को मोक्ष गमन के पश्चात उन्नीस कोड़ा - कोड़ी, उन्नीस करोड़, नौ लाख, नौ हजार, सात सौ पिच्यानवे मुनिराजों ने इस कूट से सिद्धत्व पद को प्राप्त किया हैं। इस कूट की भाव सहित वन्दना करने से एक करोड़ प्रोषध उपवास का फल मिलता है।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नम:।

विशेष : प्रवर्तमान चौबीसी के काल में तीर्थंकर श्री पुष्पदन्त जी से लेकर तीर्थंकर श्री धर्मनाथ जी तक धर्म की व्युच्छित्ति हुई। हुण्डावसर्पिणी काल के दोष के कारण, सात तीर्थंकर तक धर्म व्युच्छिती रही ।

व्युच्छित्ति : वक्ता व श्रोता का विच्छेद होने के कारण, दीक्षा के अभिमुख होने वालों के अभाव में धर्मरुपी दीपक का बुझ जाना धर्म व्युच्छित्ति है।

भावदत्त राजा की कथा : सौधर्म इन्द्र की सभा में प्रसंग उठा कि भरत क्षेत्र में सम्यग्दृष्टि कौन है ???? तब इन्द्र ने बताया भावदत नामक राजा ही सम्यग्दृष्टि हैं। यह वृतांत सुनकर अम्बिक नामक देव भावदत्त नामक राजा के पास परीक्षा करने पहुंच गया। अम्बिक देव ने अद्भुत नवरत्नो से युक्त, एक पात्र - वर्तन राजा के

सुदत्तवर कूट

धर्मनाथ जिनराज का, कूट सुदत्तवर है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेंद्रादि मुनि 29 कोड़ा कोड़ी 19 करोड़ 9 लाख 9 हजार 765 मुनि इस कूट से सिद्ध भये,तिनके चरणारविन्द को मेरा मन,वच,काय से बारम्बार नमस्कार हो,जलादि अर्घ्य निर्व. स्वाहा ।। 17 ।।

सम्मुख रखा व कहॉ कि इन्द्र ने आपको भेट स्वरुप भेजा हैं। राजा ने देव के बार बार अनुग्रह करने पर भी, उसे लेना स्वीकार नही किया। तब अम्बिक देव ने राजा को कहॉ कि ऐसी अकामना अर्थात निस्पृहता बिना सम्यक्त्व के नही हो सकती। भरत क्षेत्र में तुम अकेले ही सम्यग्दृष्टि हो । अम्बिक देव ने अत्युतम व प्रभावोत्पादक ध्वनि वाली एक भेरी राजा को दी व बताया कि इस भेरी की ध्वनि को सुनने से यहॉ करोड़ो रोगो की हानि होगी। देव के आग्रह पर, परोपकार के लिये, सभी को सारे रोगो के शमन के लिये राजा ने वह भेरी ग्रहण की। एक माह में एक दिन, पृत्येक प्रहर उस भेरी को बजाने के लिये, चार उतम मनुष्यो की नियुक्ति कर दी। उस भेरी के नाद से सभी निरोगी हो गये। भेरी के नाद की ख्याति दूर दूर तक फैल गई। एक बार राजगृह नगर का राजा वातरोग से पीड़ित हो गया। भेरी के प्रभाव को सुनकर, वह श्रीपुर नगर आया मगर पता चला कि भेरी अब एक माह के पश्चात ही बजेगी। उस भेरी पालक को एक करोड़ स्वर्ण मुद्राये का लालच में, भेरी को जरा सा तोड़कर, उस वात रोग से ग्रसित राजा को दे दी। जिससे उस भेरी को घिसकर व उसके नाद को सुनकर राजा के रोग का शमन हो गया। इस प्रकार करते करते भेरी को नष्ट हो जाने पर, उस भेरी पालक ने वैसी ही एक नई भेरी राजमंदिर मे स्थापित कर दी जो प्रभावहीन होने के कारण रोग शमन नही करती थी। राजा भावदत को जब पता चला तो उन्हे संसार से वैराग्य हो गया। और राजा भावदत ने तेतींस करोड़ भव्यो के साथ सम्मेद शिखर जी की वंदना की व सुदत्त वर कूट पर भाव सहित प्रणाम किया जिससे वह संसार बंधन से मुक्त हो गये।

सुधीजन भूल सुधार कर पढ़ें।
जय जिनेन्द्र

श्री सुमतिनाथ जी: अविचल कूट

अब हम पाँचवें तीर्थंकर श्री सुमतिनाथ जी की जाप व कूट वंदना करेंगे। श्री सुमतिनाथ जी की कूट का नाम अविचल कूट है। यह कूट भी श्री "गौतम स्वामी जी वाले समतल मैदान में ही स्थित है। श्री सुमतिनाथ जी की अविचल कूट पर श्याम वर्णीय चरण अंकित हैं। श्री सुमतिनाथ जी की अविचल कूट से पहले पन्द्रहवें तीर्थंकर श्री धर्मनाथ जी की सुदत्तवर कूट है तथा श्री सुमति नाथ जी की अविचल कूट के पश्चात् सोलहवें तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ जी की कुन्दप्रभ कूट अवस्थित है।

श्री सुमतिनाथ जी सहित, हजारों मुनिराजो इस अविचल कूट से मोक्ष को गयें। श्री सुमति नाथ जी के मोक्ष गमन के पश्चात , अविचल कूट से, एक अरब, चौरासी करोड़, चौदह लाख,, सात सौ इक्यासी मुनिराजों ने इस कूट से सिद्धत्व पद प्राप्त किया है। इस अविचल कूट की भाव सहित वंदना करने से एक करोड़, प्रोषध उपवास का फल प्राप्त होता है।

अतिरिक्त जानकारी

राजा आनंदसेन ने चारण ऋद्धिधारी मुनिराज के दर्शनार्थ गये व मुनिराज से अपनी आयु मात्र 13 दिन की शेष जानकर, राजा दीक्षा ग्रहण करने को तत्पर हो गये। मुनिराज ने बताया कि अल्पआयु वालो की दीक्षा नही होती। राजा ने अपनी सदगति का उपाय पूछा तब मुनिराज ने बताया कि सम्मेद शिखर की तीर्थ वंदना करने से, उसके निमित से जल्दी मुक्ति होती हैं। और राजा आनंदसेन ने मोक्ष की अभिलाषा से , श्वेत वस्त्र धारण कर , चतुर्विध संघ के साथ, सम्मेद शिखर की यात्रा के लिसे प्रस्थान किया। और 32 लाख भव्य जीवो के साथ, सम्मेद शिखर पहुंचे। अविचल कूट की वंदना करके, सिद्ध पद प्राप्त किया। अविचल कूट की ध्यान करने से, अवश्य ही शाश्वत सिद्ध पद की प्राप्ति होती हैं ।

जाप्य मन्त्र :

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

अविचल कूट

सुमतिनाथ जिनराज का, अविचल कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेंद्रादि मुनि 1 अरब 84 करोड़ 14 लाख 781 मुनि इस कूट से सिद्ध भये,तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो,जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।।18।।

सुधीजन भूल सुधार कर पढ़ें।

जय जिनेन्द्र

श्री शान्तिनाथ जी : कुन्दप्रभ कूट

अब हम सोलहवें तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ जी की जाप व उनकी कुन्दप्रभ कूट की भाव वन्दना करेंगे ।श्री शान्तिनाथ जी की कूट का सम्बोधन कुन्दप्रभ कूट है। इस कूट पर श्याम वर्णीय चरण अंकित हैं। इस कूट से पूर्व पाँचवे तीर्थंकर श्री सुमति नाथ जी की अविचल कूट व इसके पश्चात् वर्तमान शासन नायक श्री महावीरस्वामी जी की कूट अवस्थित है। श्री शान्तिनाथ जी एक हजार मुनिराजों के साथ, इस कुन्दप्रभ कूट से सिद्धत्व पद को प्राप्त किया । भगवान के मोक्ष गमन के पश्चात, राजा सुदर्शन ने संघ सहित इस कूट की वंदना की । अनंतवीर्य मुनिराज से राजा सुदर्शन ने अपनी पूर्व पर्याय के विषय में जाना कि वह पूर्व पर्याय में सोमशर्मा नामक दरिद्र ब्राहण था और सम्मेद शिखर की वंदना के फलस्वरुप, इस पर्याय में राजा हुआ। राजा सुदर्शन ने यह जानकर, फिर से सम्मेद शिखर जी की वंदना की । वैराग्य को प्राप्त होकर, पवित्र मुनिदीक्षा धारण की। एक करोड़, चौरासी लाख मुनिराजों के साथ, केवल ज्ञान प्राप्त करके, इसी कूट से सिद्धत्व पद को प्राप्त किया । इस कूट से श्री शान्तिनाथ जी के मोक्ष गमन के पश्चात्, एक कोड़ाकोड़ी, नौ करोड़, नौ लाख, नौ हजार, नौ सौ निन्यानवें। मुनिराजो ने इस कूट से सिद्धत्व को प्राप्त किया है । इस कूट की भाव सहित वन्दना करने से एक करोड़ प्रोषध उपवास का फल मिलता है ।

विशेष : तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ जी के शासन काल में ही धर्म का पुन: प्रादुर्भाव हुआ, यानि जो धर्म व्युच्छित्ति श्री धर्मनाथ जी के तीर्थ काल तक रही। उस धर्म व्युच्छिति का अन्त श्री शान्तिनाथ जी के तीर्थकाल में हुआ। तभी से धर्म की निरन्तर - अविरल धारा प्रवाहित है । यानि धर्म की शान्तिधारा बह रही है, शान्तिधारा नाम सार्थक इसीलिये है। तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ जी की कूट के बाद तीर्थंकर श्री महावीरस्वामी जी की कूट अवस्थित है। इसका प्रतीकाशय यह भी ग्रहण किया जा सकता है कि तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ जी से धर्म की जो "अजस्र धारा" पुन: प्रवाहित हुई है, वह वर्तमान चौबीसी के चरम तीर्थंकर श्री महावीरस्वामी जी पर्यन्त, अविच्छिन्न / अक्षुण्ण /अविरल रूप से प्रवाहित रहेगी। कुन्द प्रभ कूट स्थित चरणों की वन्दना करने हेतु हमें कुछ सीढियाँ चढ़नी होती हैं। मैदान में स्थित दस कूटों में, इस कूट के दर्शन हेतु हमें सर्वाधिक सीढियाँ चढ़नी होती हैं।

जाप्य मन्त्र : ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नम:।

सुधी सद्स्य, कृपया भूल सुधारकर पढ़ें।
आप तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ जी की कूट स्थित चरण युगल का ध्यान करें

कुंदप्रभ कूट

शांतिनाथ जिनराज का, कुंदप्रभ कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह ॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेंद्रादि मुनि 9 कोड़ा कोड़ी 9 लाख 9 हजार 999 मुनि इस कूट से सिद्ध भये,तिनके चरणारविन्द को मेरा मन,वच,काय से बारम्बार नमस्कार हो,जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।।18।.

श्री महावीरस्वामी : श्री पावापुरी

हम चौबीसवें तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी जी की जाप व कूट की वन्दना करेंगे । श्री महावीर स्वामी जी की कूट पर कोई नाम अंकित नही हैं। श्री महावीर स्वामी जी की कूट पर श्वेत वर्ण के चरण अंकित हैं । इस कूट पर सबसे छोटे चरण अंकित हैं जो इस बात के प्रतीक स्वरुप हैं कि चौबीस तीर्थंकरो में श्री महावीर स्वामी की अवगाहना सबसे कम थी। श्री महावीर स्वामी जी की कूट से पूर्व सोलहवें तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ जी की कुन्दप्रभ कूट एवं श्री महावीर स्वामी जी की कूट के पश्चात् सातवें तीर्थंकर श्री सुपार्श्व नाथ जी की प्रभाष कूट अवस्थित है ।

यह कूट भी श्री गौतम स्वामी वाले समतल मैदान में ही अवस्थित है। श्री महावीर स्वामी जी की यह कूट प्रतीक स्वरुप यहाँ पर बनाई गई है, क्योंकि श्री महावीर स्वामी जी ने श्री पावापुर जी के पद्म सरोवर से सिद्धत्व को प्राप्त किया है। वे श्री सम्मेदशिखर जी से मोक्ष नहीं सिधारे।

श्री महावीर स्वामी जी श्री पावापुर जी से एकाकी ही मोक्ष गये हैं। श्री हरिवंश पुराण जी में उल्लेख आया है कि श्री पावापुरी जी के पद्म सरोवर से श्री महावीर स्वामी जी सहित छत्तीस मुनिराजों ने सिद्धत्व प्राप्त किया। आप चाहें तो श्री महावीर स्वामी जी की कूट का ध्यान लगाकर या फिर श्री पावापुर जी के पद्म सरोवर का ध्यान लगाकर जाप पूर्ण कर सकते हैं। जहाँ भी आपके भाव अधिक लगें, वहाँ का ध्यान लगाकर जाप करिये।

जाप्य मन्त्र :- ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नम:।

विशेष : सिद्ध क्षेत्र श्री पावापुरी जी में तीर्थंकर श्री महावीरस्वामी जी की निर्वाणस्थली पर तीन चरण युगल (अलग - अलग, थोड़ी - थोड़ी दूरी पर) अंकित हैं। ये क्रमश: तीर्थंकर कुण्ड / गणधर कुण्ड / केवली कुण्ड सम्बोधन प्राप्त हैं।

सुधीजन भूल सुधार कर पढ़ें।
जय जिनेन्द्र

श्री महावीर स्वामी जी की टोंक

महावीर भगवान की टोंक

महावीर जिन सिद्‌ध भये, पावापुर से जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर स्वामी पावापुर के पद्म सरोवर स्थान से 36 मुनि सहित सिद्ध भये, तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो,जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।। 19 ।।

श्री सुपार्श्वनाथ जी प्रभाष कूट

अब हम सातवें तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथ जी की जाप व उनकी प्रभाष कूट की भाव वन्दना करेंगे।श्री सुपार्श्वनाथ जी की कूट का नाम प्रभाष कूट है। इस प्रभाष कूट पर श्याम वर्ण के चरण अंकित हैं। इस कूट के पूर्व चौबीसवें तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी जी की कूट है। इस कूट के पश्चात् तेरहवें तीर्थंकर श्री विमलनाथ जी की सुवीर कूट अवस्थित है।

इस कूट की रज को बहुत चमत्कारिक माना जाता है। इस कूट की रज को अपने शरीर पर धारण करने से व्याधियों से निजात मिलती है। कौशाम्बी के राजा उद्योतक कोढ़ से ग्रसित हो गये थे। मुनिराज के उपदेशानुसार इस पर्वतराज की वन्दना की। प्रभाष कूट पर अष्ट द्रव्यों से भक्तिभाव पूर्वक, पूजन पाठ किया तो उनके कोढ़ का शमन हो गया। इससे राजा उद्योतक बहुत प्रभावित हुये व उन्हें वैराग्य उत्पन्न हो गया। इसी प्रभाष कूट पर उन्होंने मुनि दीक्षा धारण कर ली। उनके साथ 32 लाख अन्य लोगों ने भी दीक्षा धारण कर ली। इसके पश्चात राजा उद्योतक सहित 16 लाख अन्य दीक्षित लोग भी उसी कूट से मुक्त हो गए। तभी से इस कूट की रज को अत्यधिक चमत्कारिक माना जाता है। आज हम सभी इसी प्रभाष कूट का ध्यान लगाकर, इसी कूट पर जाप करेंगे। श्री सुपार्श्वनाथ जी के मोक्ष गमन के पश्चात, 49 कोड़ा - कोड़ी, 84 करोड़, 72 लाख, 7 हजार, 742 मुनिराजों ने इसी प्रभाष कूट से सिद्धत्व पद को प्राप्त किया। इस प्रभाष कूट की भाव सहित वन्दना करने से 32 करोड़ प्रोषधोपवास का फल प्राप्त होता है।

जाप्य मन्त्रः ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।

प्रभास कूट

सुपार्श्वनाथ जिनराज का, प्रभास कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेंद्रादि मुनि 49 कोड़ा कोड़ी 84 करोड़ 72 लाख 7 हजार 742 मुनि इस कूट से सिद्ध भये,तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।। 20।।

सुधीजन भूल सुधार कर पढ़ें।
जय जिनेन्द्र

श्री विमलनाथ जी : सुवीर कूट

अब हम तेरहवें तीर्थंकर श्री विमलनाथ जी की जाप व उनकी सुवीर कूट की भाव वंदना करेंगे । तीर्थंकर श्री विमलनाथ जी की कूट का नाम सुवीर कूट है । इस कूट पर श्याम वर्णीय चरण - युगल अंकित हैं। इस कूट से पूर्व, सातवें तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथ जी की प्रभाष कूट व इस कूट के पश्चात्, दूसरे तीर्थंकर श्री अजितनाथ जी की सिद्धवर कूट अवस्थित है।

सुवीर कूट से श्री विमलनाथ जी ने 1,000 मुनिराजो के साथ निर्वाण पद प्राप्त किया श्री विमल नाथ जी भगवान के मोक्ष गमन के पश्चात, सबसे पहले सुप्रभ नामक राजा ने संघ सहित इस कूट की वंदना की। सुप्रभ नामक राजा ने एक अरब, चौरासी करोड़ भव्य जीवो के साथ सम्मेद शिखर पर्वत पर वंदना की व इस सुवीर कूट पर भक्तिपूर्वक पूजन की व एक अरब नो करोड़ भव्य जीवो के साथ जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण की व अष्ट कर्मो का नाश करके इस सुवीर कूट से मोक्ष गये

इस कूट से श्री विमल नाथ जी भगवान के मोक्ष गमन के पश्चात, सात करोड़, साठ लाख, छः हजार, सात सौ बयालीस मुनिराजों ने सिद्धत्व पद को प्राप्त किया हैं।

इस कूट की भाव सहित वन्दना करने से, एक करोड़ प्रोषध उपवास का फल मिलता है।

विशेष : तीर्थंकर श्री विमल नाथ जी के प्रथम चार कल्याणक श्री कम्पिला जी (उ.प्र.) में सम्पन्न हुये हैं ।

श्री पद्मपुराण जी के अनुसार १० वें चक्रवर्ती श्री हरिषेण जी की जन्मभूमि भी यही काम्पिल्य नगरी है।

जाप्य मन्त्र : ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः।

जिन्होंने श्री कम्पिल जी क्षेत्र की वन्दना कर ली है, वे सदस्य वहाँ विराजमान मूल नायक श्री विमलनाथ जी की प्रातिमा जी का ध्यान लगा सकते हैं। अथवा श्री सम्मेदशिखर जी स्थित कूट का भी ध्यान कर सकते हैं। जहाँ भी आपके भाव अधिक लगें वहाँ का ध्यान करके जाप पूर्ण करिये।

ध्यान रहे : उपर्युक्त उपाय हमारे चञ्चल मन - मर्कट की गति को रोककर एकाग्र चिन्तन में लीन होने हेतु किया जाने वाला पुरुषार्थ है। दैनन्दिन अभ्यास से भावों की विशुद्धि बढ़ना सुनिश्चित है। निरन्तरता बनाये रखें।

सुधीजन भूल सुधार कर पढ़ें।
जय जिनेन्द्र

श्री विमलनाथ प्रभु की टोंक

सुवीर कूट

विमलनाथ जिनराज का, सुवीर कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेंद्रादि मुनि 70 कोड़ा कोड़ी 60 लाख 6 हजार 742 मुनि इस कूट से सिद्ध भये,तिनके चरणारविन्द को मेरा मन,वच,काय से बारम्बार नमस्कार हो,जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।। 21।।

श्री अजितनाथ जी : सिद्धवर कूट

अब हम द्वितीय तीर्थंकर श्री अजितनाथ जी की जाप व उनकी कूट की वन्दना करेंगे। यहाँ पर श्वेत वर्ण के चरण - युगल अंकित हैं। इस कूट से पूर्व तेरहवें तीर्थंकर श्री विमलनाथ जी की कूट सुवीर अवस्थित है। इस कूट के पश्चात् बाइसवें तीर्थंकर श्री नेमिनाथ जी की कूट अवस्थित है। तीर्थंकर श्री अजितनाथ जी सहित, एक अरब, चौरासी करोड़, पैंतालीस लाख मुनिराजों ने यहाँ से सिद्ध पद को प्राप्त किया.

अतिरिक्त जानकारी :

तीर्थंकर प्रभु के निर्वाण के पश्चात् यहाँ चक्रवर्ती श्री सगर जी ने, दो चारण ऋद्धि धारी मुनिराजों से वन्दना की विधि पूछकर, संघ सहित सिद्धवर कूट की वन्दना की थी। इस सिद्ध क्षेत्र पर यात्रा संघ लाने वाले प्रथम संघपति चक्र. श्री सगर जी थे। श्री सम्मेदाचल जी से, वर्तमान चौबीसी में मोक्ष जाने वाले प्रथम तीर्थंकर श्री अजितनाथ जी ही हैं। सिद्धवर कूट सम्बोधन प्राप्त, मध्यप्रदेश में एक सिद्धक्षेत्र भी है, जो रेवा तट पर स्थित है। इस कूट की भाव सहित वन्दना करने पर 32 करोड़ प्रोषध उपवास के फल की प्राप्ति होती है।

जाप्य मंत्र -: ॐ ह्रीं श्री अजित नाथ जिनेन्द्राय नम:

सिद्धवर कूट

अजितनाथ जिनराज का, सिद्धवर कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेंद्रादि मुनि 84 करोड़ 45 लाख मुनि इस कूट से सिद्ध भये,तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वच, काय से बारम्बार नमस्कार हो,जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।। 22 ।।

सुधी सद्स्य, कृपया भूल सुधारकर पढ़ें।
आप तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ जी की कूट स्थित चरण युगल का ध्यान करें

श्री नेमिनाथ जी : ऊर्जयन्त पर्वत

अब हम बाईसवें तीर्थंकर श्री नेमिनाथ जी की जाप एवं उनकी कूट की भाव वन्दना करेंगे। तीर्थंकर श्री नेमिनाथ जी ने श्री सम्मेदशिखर जी से निर्वाण पद को प्राप्त नहीं किया है। श्री नेमिनाथ जी ने ऊर्जयन्त पर्वत से निर्वाण पद को प्राप्त किया है। श्री सम्मेद शिखर जी में उनकी कूट प्रतीक स्वरुप बनाई गई है। इसी कारण उनकी कूट पर कोई नाम अंकित नही है। इस कूट पर श्वेत वर्णीय तीन चरण युगल अंकित हैं। जो इस बात का प्रतीक है कि श्री नेमिनाथ जी के गिरिनार जी पर तीन कल्याणक सम्पन्न हुये हैं ।

श्री नेमिनाथ जी की कूट के पूर्व द्वितीय तीर्थंकर श्री अजित नाथ जी की सिद्धवर कूट एवं इस कूट के पश्चात् "तेइसवें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ जी" की स्वर्णभद्र कूट - अन्तिम कूट अवस्थित है।

श्री नेमिनाथ जी सहित बहत्तर करोड़, सात सौ मुनिराजों ने, श्री गिरिनार गिरि जी से सिद्धत्व को प्राप्त किया है।

ध्यान देने योग्य :

श्री सम्मेदशिखर जी से चार तीर्थंकरो ने निर्वाण पद प्राप्त नहीं किया। ऐसा हुण्डावसर्पिणी काल दोष के कारण हुआ है। भविष्य मे भी पूरे चौबीस तीर्थंकर श्री सम्मेदशिखर जी से ही निर्वाण पद को प्राप्त करेंगे। इसी तथ्य के प्रतीक स्वरुप पूरे चौबीस तीर्थंकरो की कूट इस पर्वत पर बनी हुई हैं । जिन चार तीर्थंकरों ने यहाँ से निर्वाण पद नहीं पाया, उनके श्वेत वर्णीय चरण युगल, सम्बन्धित कूटों पर अंकित हैं। इन कूटों पर कोई नाम का उल्लेख नहीं हैं और न ही पुस्तकों में, कितने उपवास का फल इस कूट की वन्दना से प्राप्त होता है, ऐसा भी नहीं लिखा हुआ है।

आप चाहें तो श्री गिरिनार जी पर स्थित पाँचवी कूट का ध्यान लगाकर भी वहाँ जाप कर सकते हैं ।

जाप्य मन्त्र :

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नम:।

नेमिनाथ जिनराज की टोंक

नेमिनाथ जिन सिद्‌ध भये, सिद्‌ध क्षेत्र गिरनार।
मन वच तन कर पूजहूँ, भव दधि पार उतार॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेंद्रादि शम्बु प्रद्युम्न अनिरुद्ध इत्यादि 72 करोड़ 700 मुनि गिरनार पर्वत से मोक्ष गये,तिनके चरणारविन्द को मेरा मन,वच,काय से बारम्बार नमस्कार हो,जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।। 23।।

सुधीजन भूल सुधार कर पढ़ें।
जय जिनेन्द्र

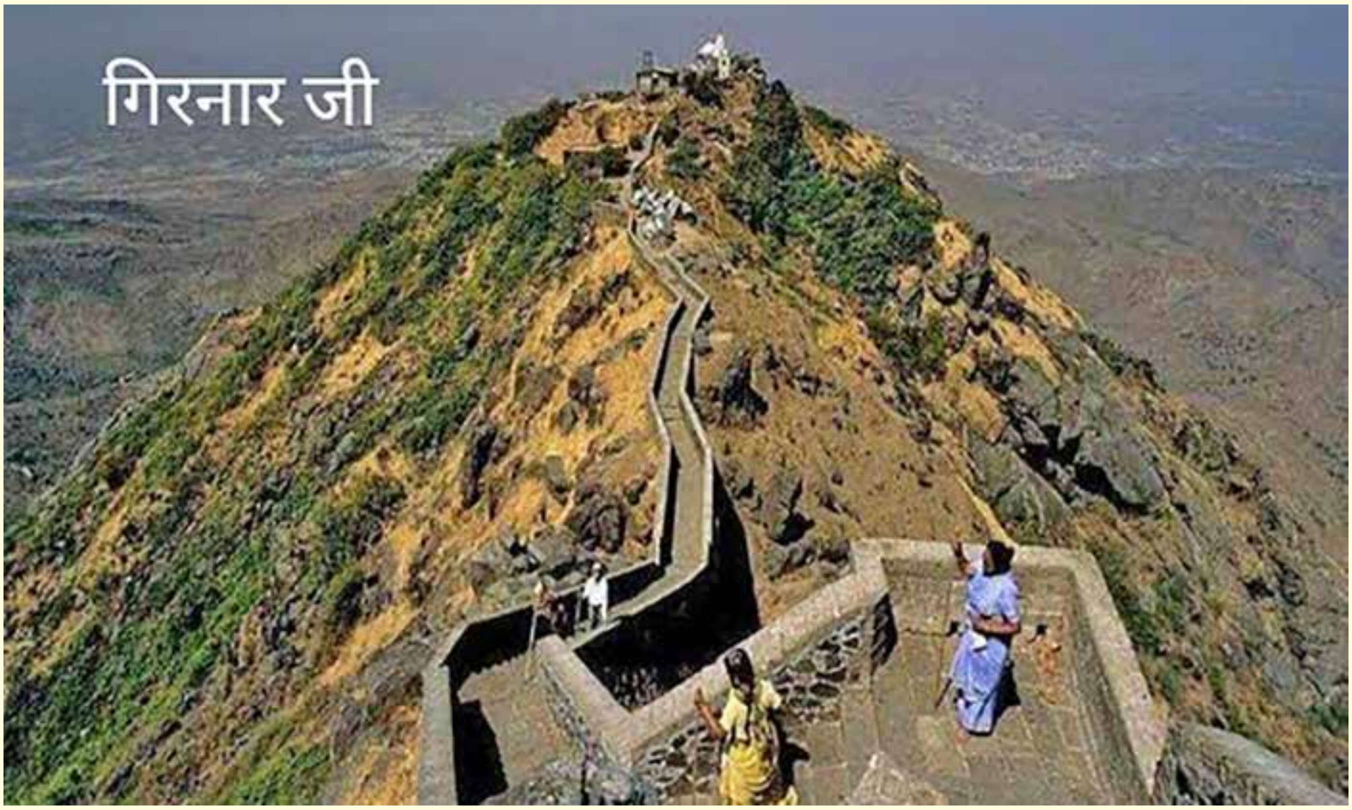
गिरनार जी

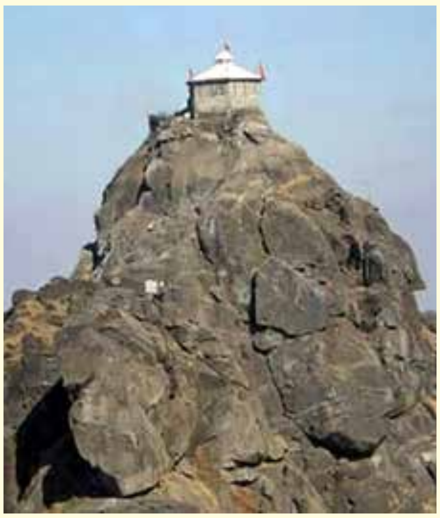

'भगवान् नेमिनाथ
मोक्ष स्थली गिरनार जी पांचवी
टोंक जहा से प्रभु निर्वाण पधारे

श्री पार्श्वनाथ जी : स्वर्णभद्र कूट

अब हम तेईसवें तीर्थंकर श्री पार्श्वप्रभु जी की जाप व उनकी स्वर्णभद्र कूट की भाव वन्दना करेंगे। इस कूट का नाम स्वर्णभद्र कूट है । इस कूट पर श्याम वर्णीय चरण अंकित हैं । इस कूट से पूर्व बाईसवें तीर्थंकर श्री नेमिनाथ जी की कूट है व इस कूट के पश्चात् कोई कूट नहीं है, क्योंकि यह इस पर्वत पर अन्तिम कूट है। और पूरे चौबीस तीर्थंकरों में, इस पर्वत से सबसे अन्त में सिद्धत्व प्राप्त करने वाले श्री पार्श्वनाथ जी ही हैं। पूरे पर्वत पर यह सबसे ऊंची कूट है। इस कूट पर दो परिक्रमायें हैं। एक बाहर से परिसर की परिक्रमा व दूसरी कूट की परिक्रमा है।

यह कूट भी श्री पद्मप्रभू जी की मोहनकूट की तरह तीन तरफ से खुली हुई हैं। समस्त टोंको में एकमात्र टोंक यही है जिस पर शिखर (मन्दिर जी) निर्मित है। इस कूट पर नीचे गुफा में भी चरण बना दिये गये हैं । गुफा वाले चरण ऊपर के मन्दिर वाले चरण से लगभग एक सौ वर्ष के पश्चात् बने हैं। मूल चरण ऊपर वाली कूट के ही हैं । इस कूट की वन्दनार्थ एक रास्ता सीधा ईसरी से नीमिया घाट होता हुआ इसी स्वर्णभद्र कूट के लिये जाता है । इस कूट पर पहुँचने हेतु, अन्य कूटों की अपेक्षा सर्वाधिक सीढियाँ चढ़नी होती हैं।

इस स्वर्ण भद्र कूट से श्री पार्श्वनाथ जी 36 मुनिराजों के साथ सहमुक्त हुये हैं। श्री पार्श्वनाथ जी के मोक्ष गमन के पश्चात, सबसे पहले भावसेन नामक राजा ने, चतुर्विध संघ सहित एक करोड़, चौरासी लाख भव्यो के साथ इस कूट की वंदना की हैं व स्वर्णभद्र कूट पर पूजन करके, दीक्षा ग्रहण करके, उन मुनिराजों के साथ मुक्ति को प्राप्त कर लिया ।

इस कूट से श्री पार्श्वनाथ जी के मोक्ष गमन के पश्चात, बयासी करोड़, चौरासी लाख, पैंतालीस हजार, सात सौ बयालीस मुनिराजों ने सिद्धत्व को प्राप्त किया है। इस कूट की भाव सहित वन्दना करने से सोलह करोड़ उपवास का फल प्राप्त होता है । इस कूट का ध्यान लगाकर, स्वर्ण भद्र कूट पर स्थापित चरणों को हृदय में स्थापित कर जाप देवें, अथवा तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ जी की जन्मस्थली का स्मरण करते हुये जाप / वन्दना /पूजादि अनुष्ठान करें।

जाप्य मन्त्र :- ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।

सुधीजन भूल सुधार कर पढ़ें।
जय जिनेन्द्र

स्वर्णभद्र कूट
पार्श्वनाथ जिनराज का, स्वर्णभद्र है कूट।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह॥
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेंद्रादि मुनि 82 करोड़ 84 लाख 45 हजार 742 मुनि परम पुनीत स्वर्णभद्र पर्वत से मोक्ष गये,तिनके चरणारविन्द को मेरा मन,वच,काय से बारम्बार नमस्कार हो,जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।। 24 ।।

सम्मेद शिखर सम्पूर्ण वंदना

1 **श्री गौतम गणधर कूट -** 35 चरण युगल है 24 तीर्थंकरो के प्रमुख गणधरो के 24 चरण युगल व 10 चरण युगल श्री पारसनाथ भगवान के समस्त गणधरो के श्वेत वर्ण के है व एक चरण युगल शासन नायक श्री महावीर स्वामी के प्रमुख गणधर गौतम गणधर के श्याम वर्णीय है।

विशेषता

इस कूट की विशेषता है कि यह स्थान पर्वत पर समतल भूमि पर है इस कूट से एक साथ 9 कूट के दर्शन और होते है पॉच कूंटे दायी और व चार कूट बायी और हैं।

2 इस टोंक पर 35 चरण युगल अंकित हैं। जिनमे 34 श्वेत वर्णीय व एक श्याम वर्णीय हैं।

2 **श्री कुंथुनाथ जी - ज्ञानधर कूट -** श्याम वर्णीय चरण युगल अंकित है।

3 **श्री नमि नाथ जी -** मित्रधर कूट श्याम वर्णीय चरण युगल

4 **श्री अरहनाथ जी - नाटक कूट -** श्याम वर्णीय चरण युगल

5 **श्री मल्लिनाथ जी - संवल कूट।** श्याम वर्णीय चरण युगल

6 **श्री श्रेयांस नाथ जी - संकुल कूट -** श्याम वर्णीय चरण युगल

7 **श्री सुविध नाथ जी (पुष्पदंत जी) - सुप्रभ कूट -** श्वेत वर्णीय चरण युगल

विशेषता

इस कूट की यह विशेषता है कि यह अकेली कूट है जिसमें चरण चारो दिशाऔ में खुले हैं। यह कूट बहुत ऊची कूट हैं। इस कूट की विशेषता है कि इस कूट से सर्वाधिक कूटो के दर्शन होते हैं। शायद इसी कारण मधुबन मे तेरह पंथी कोठी व बीस पंथी कोठी, दोनो में जिन मंदिर में विराजित मूलनायक श्री पुष्पदंत जी हैं।

8 **श्री पद्म प्रभ जी - मोहन कूट -** श्याम वर्णीय चरण युगल

विशेषता

इस कूट में चरण तीन दिशाऔ से खुले हुये है।

9 **श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान - निर्जर कूट-** श्याम वर्ण के चरण

विशेषता

यहॉ पर आचार्य भगवंत श्री विद्यासागर जी महामुनिराज के आज्ञानुवर्ती शिष्य, मुनि श्री प्रणम्य सागर जी ने शिला पर बैठकर दो घंटे ध्यान लगाया था।

इस कूट से ही सबसे ज्यादा मुनि मोक्ष गये है

10 **श्री चन्द्रप्रभू जी - ललितकूट -** श्याम वर्णीय चरण युगल

विशेषता

इस कूट की यह विशेषता है कि दूर से देखने पर चन्द्नमा हमेशा इसी कूट के उपर नजर आता है। और इस कूट मे दो परिक्रमा हैं। एक बाहर कूट की परिक्रमा व दूसरी चरणो की परिक्रमा

11 **श्री आदिनाथ जी -** कैलाश पर्वत से मोक्ष गये - श्वेत वर्णीय चरण युगल

विशेषताये

1 सबसे बड़े चरण है क्योकि आदिनाथ भगवान की अवगाहना सबसे ज्यादा थी।

2 चरण के बीच मे बैल का चिन्ह बना है।

3 श्वेत वर्णीय चरण युगल है।

12 **श्री शीतलनाथ जी - विधुतवर कूट -** श्याम वर्णीय चरण युगल हैं।

13 **श्री अनंत नाथ जी - स्वयंभू कूट -** श्याम वर्णीय चरण युगल

14 **श्री संभव नाथ जी -** धवल कूट श्वेत वर्णीय चरण युगल

15 **श्री वासूपूज्य जी -** चंपापुर से मोक्ष गये - श्वेत वर्णीय पॉच कल्याणको के प्रतीक स्वरुप, पॉच चरण युगल अंकित है।

16 **श्री अभिनंदन नाथ भगवान - आनंद कूट -** श्याम वर्ण के चरण

विशेषता

इस कूट पर बंदर हमेशा बैठे रहते है।

अब इस कूट की वंदना के पश्चात,जल मंदिर आता है जहॉ पर लगभग 120 वर्षो पूर्व दिंगबर जैन प्रतिमाये स्थापित थी। राजस्थान के नागौर मे इसके प्रमाण आज भी विद्यमान है।

17 **श्री धर्मनाथ भगवान - सुदतवर कूट -** श्याम वर्णीय चरण युगल

18 **श्री सुमतिनाथ जी -** अविचल कूट श्याम वर्णीय चरण युगल

19 **श्री शांतिनाथ जी - कुंदप्रभ कूट -** श्याम वर्णीय चरण युगल

20 **महावीर स्वामि जी -** श्वेत वर्णीय चरण युगल

विशेषता

सबसे छोटे चरण है क्योकि महावीर स्वामि की अवगाहना सबसे कम थी व सबसे छोटी कूट है ।

21 **श्री सुपार्श्व नाथ भगवान - प्रभाष कूट -** श्याम वर्णीय चरण युगल

विशेषता

इस टोक पर, उधोतक नामक राजा ने, कोढ होने पर, इस कूट की भाव सहित वंदना की व इस कूट पर पूजन विधान रचाया। व इस कूट की रज को लगाने पर कोढ का शमन हो गया - तभी से सुपार्श्वनाथ भगवान की कूट की रज को बहुत चमत्कारिक माना जाता हैं।

22 श्री विमल नाथ भगवान - सुवीर कूट - श्याम वर्णीय चरण युगल

23 श्री अजित नाथ भगवान - सिद्धवर कूट - श्वेत वर्णीय चरण युगल

विशेषता

इस सम्मेद शिखर पर्वत से सबसे पहले मोक्ष जाने वाले श्री अजित नाथ भगवान है।

24 श्री नेमिनाथ भगवान - गिरनार जी उर्ज्यंत पर्वत से मोक्ष गये हैं। गिरनार जी से तीन कल्याणक प्रतीक स्वरुप, तीन चरण युगल श्वेत वर्णीय अंकित हैं।

25 श्री पार्श्वनाथ भगवान- स्वर्णभद्र कूट - श्याम वर्णीय चरण युगल

विशेषता

इस कूट मे भी। ललित कूट की तरह, दो परिक्रमा है। एक परिक्रमा कूट की व दूसरी परिक्रमा चरणो की

यह कूट सबसे ऊंची कूट है। स्वर्णभद्र कूट भी तीन तरफ से खुली हुई हैं। सम्मेद शिखर जी मे टोटल 25 कूट है चौबीस तीर्थंकर की कूट है व एक कूट श्री गौतम गणधर के नाम से हैं। 25 (पच्चीस) कूटो में से 17 (सतरह) कूटो के चरण युगल श्याम वर्ण के है व 8 (आठ) कूटो में श्वेत वर्ण के हैं।

जो चार तीर्थंकर सम्मेद शिखर जी से मोक्ष नही गये उनके चरण युगल श्वेत वर्णीय हैं।

श्री आदिनाथ जी

श्री वासूपूज्य जी

श्री नेमिनाथ जी

श्री महावीर स्वामि जी व

सम्मेद शिखर जी से सबसे पहले मोक्ष जाने वाले तीर्थंकर श्री अजित नाथ जी व श्री संभव नाथजी इनके चरण युगल श्वेत वर्ण के है 9 वे पुष्पदंत जी के श्वेत वर्ण के है व श्री गौतम गणधर स्वामी जी की कूट पर इस प्रकार इन आठ कूटो पर श्वेत वर्ण के चरण युगल अंकित हैं। शेष सभी टोंको पर श्याम वर्ण के चरण हैं। श्री गौतम गणधर की कूट पर्वत पर समतल मैदान मे अवस्थित हैं। इस समतल मैदान मे ही हमे एक साथ दस कूटो के दर्शन एक साथ हो जाते हैं। श्री गौतम स्वामि जी की कूट के बायी और से पॉच कूट (17,21, 18, 19,11)वे नम्बर के भगवान जी व दायी और चार कूट (15,5,16,24) वे नम्बर के भगवान की कूट हैं। श्री आदिनाथ भगवान की कूट की तीन विशेषताये है।

1 श्वेत वर्ण के चरण युगल है

2 चरण मे बीच मे बैल का चिन्ह बना है अन्य। किसी भी कूट मे कोई चिन्ह अंकित नही है

3 सबसे बड़े चरण है।

पर्वत पर केवल एक ही कूट है ऐसी है जहॉ से समस्त कूटो के दर्शन होते है

नोवे तीर्थकर श्री पुष्पदंत जी और यही एकमात्र ऐसी कूट है जो चारो दिशाऔ में खुली हुई हैं । सभी टोंको मे केवल दो ही कूट ऐसी है जिन में दो - दो परिक्रमा है 8वे श्री चन्द्रप्रभ जी की ललित कूट 23 वे श्री पार्श्वनाथ जी की स्वर्णभद्र कूट।

श्री पद्म प्रभ जी की मोहन कूट तीन तरफ से खुली है व श्री पार्श्व नाथ जी की स्वर्ण भद्र कूट भी तीन तरफ से खुली है शेष सभी कूट एक ही तरफ से खुली है सभी कूटो मे केवल तीन कूट ही ऐसी है जिन पर एक चरण युगल से ज्यादा चरण युगल अंकित हैं। श्री गौतम स्वामि की कूट - 35 युगल चरण श्री वासुपूज्य जी की कूट पर पॉच युग्ल चरण हैं। श्री नेमिनाथ भगवान की कूट पर तीन युग्ल चरण स्थापित हैं। श्री पार्शव नाथ भगवान की कूट पर नीचे गुफा मे भी चरण अंकित है। इस प्रकार श्री पार्श्वनाथ भगवान की टोंक पर भी दो चरण है सम्मेद शिखर जी मे 25 टोंको पर टोटल चरण 66 चरण युगल हैं। श्री सम्मेद शिखर जी से वर्तमान मे हुंडावसर्पिणी काल के दोष के कारण ही बीस तीर्थंकर ही शाश्वत भूमि से मोक्ष गये है जब्कि भविषय काल मे यहॉ से पूरे 24 तीर्थंकर ही मोक्ष जायेगे इसी कारण यहॉ पूरे 24 तीर्थंकर की कूट बनी हुई है।

यह सम्मेद शिखर जी की भाव वंदना मेरे द्वारा लिखने मे कुछ त्रुटिया रह गई हो तो क्षमा करे

5- 9- 2020

श्री मती पंकज विशाला, दिल्ली

प्रश्नोतरी

प्रश्न 1 सम्मेद शिखर जी से, सभी तीर्थंकरों की कूटो से, जो संख्या दी गई है कि अमुक कूट से इतने कोड़ी कोड़ी, इतने अरब मुनिराजो ने सिद्धत्व को प्राप्त किया यह संख्या कब से कब तक की है?

उतर : मोक्ष गमन की यह कोड़ाकोड़ी वाली संख्या उन तीर्थंकर के शासनकाल तक की है

प्रश्न 2 सबसे पहले सम्मेद शिखर जी की वंदना कौन से चक्रवर्ती ने की थी?

उतर सबसे पहले सम्मेद शिखर जी की वंदना सगर चक्रवर्ती जी ने की थी।

प्रश्न 3 श्री राम जी कौन से तीर्थंकर के समकालीन हुये थे?

उतर श्री रामचन्द्र जी, तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत नाथ जी के समकालीन हुये थे।

प्रश्न 4 सगर चक्रवर्ती कौन से तीर्थंकर के समकालीन हुये थे?

उतर सगर चक्रवर्ती तीर्थंकर श्री अजितनाथ जी के समकालीन हुये थे।

प्रश्न 5 प्रथम पड़ाव में कितनी कूटे आती है? उन कूटों को क्रम सहित लिखिये?

उतर प्रथम पड़ाव में श्री गौतम स्वामि जी के अलावा 9 तीर्थंकर की कूटे आती हैं।

प्रश्न 6 श्री कुन्थुनाथ भगवान की ज्ञानधर कूट पर किन्होने अष्ट द्रव्य से पूजन की थी?

उतर श्री कुन्थुनाथ भगवान की ज्ञानधर कूट पर सबसे प्रथम तो * प्रथम संघपति राजा सोमधर * ने अष्ट द्रव्य से पूजन की थी गणेश प्रसाद वर्णी जी ने भी जब सम्मेद शिखर जी की प्रथम बार * वंदना की थी तब ज्ञानधर कूट पर उन्होने भी अष्ट द्रव्य से पूजन की थी।

प्रश्न 7 कौन सी कूट ऐसी है जिस कूट का जो नाम है, वही चरणो के वर्ण है?

उतर धवल कूट

प्रश्न 8 श्री रामचन्द्र जी ने कितनी कूटो की वंदना की?स्वर्णभद्र कूट की वंदना क्यो नही की?

उतर श्री राम चन्द्र जी, श्री मुनिसुव्रत नाथ तीर्थंकर के काल में जन्मे थे। इसी कारण उन्होने वही तक की वंदना की, जितने तीर्थंकर उस समय तक सिद्धत्व पद को प्राप्त हुये थे। श्री राम चन्द् जी ने केवल बीस तीर्थंकरो की ही कूट की वंदना की थी। श्री राम चन्द्र जी ने स्वर्णभद्र कूट की वंदना नही की क्योंकि उस समय तक श्री पार्श्वनाथ भगवान का जन्म ही नही हुआ था।

प्रश्न 9 श्री गौतम स्वामी जी वाली कूट पर, तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ व तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी के प्रमुख गणधर के चरण युगल कितनी बार अंकित हैं व क्यों?

उतर श्री गोतम स्वामी जी की कूट पर, श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकर। व श्री महावीर स्वामी के प्रमुख गणधरो के चरण युगल दो -दो बार अंकित हैं। एक बार तो चौबीस तीर्थंकर के समस्त प्रमुख गणधर के —-चौबीस चरण युगल में समाहित है। श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकर सम्मेद शिखर से सिद्धत्व पद प्राप्त करने वाले अंतिम तीर्थंकर हैं। इसलिये इस पर्वतराज को *पार्श्वनाथ हिल * के नाम से भी जाना जाता हैं। इसी कारण इनके समस्त गणधरो के चरण युगल अंकित है। श्री महावीर स्वामी का शासनकाल चल रहा हैं इसलिये श्री महावीर स्वामी के प्रमुख गणधर श्री गौतम स्वामी के चरण युगल अंकित हैं। इसी कारण इन विशेषताऔ के कारण इन तीर्थंकरो के प्रमुख गणधरो के चरण युगल दो बार अंकित हैं।

प्रश्न 10 किस कूट से परिक्रमा लगाने पर सर्वाधिक कूटो के दर्शन होते है?

उतर श्री पुष्पदंत जी की सुप्रभ कूट से परिक्रमा लगाने पर सर्वाधिक कूटो के दर्शन होते हैं।

प्रश्न 11 कौन सी दो कूटो पर दो —दो बार परिक्रमा है?

उतर श्री चन्द्रप्रभ जी की ललित कूट व श्री पार्श्वनाथ जी की स्वर्णभद्र कूट इन दो कूटो पर दो —दो परिक्रमा हैं।

प्रश्न 12 कौन सी कूट की रज को चमत्कारिक माना जाता हैं?

उतर प्रभास कूट की रज को चमत्कारिक माना जाता हैं।

प्रश्न 13 कौन सी कूट मंगलाचरण स्वरुप हैं?

उत्तर श्री गोतम स्वामि जी, चौबीस तीर्थंकरो के समस्त गणधरो की कूट मंगलाचरण स्वरुप हैं।

प्रश्न 14 तीर्थंकर जब दीक्षा लेते हैं,उनके साथ जो सहदीक्षित होते हैं यानि उनके साथ जितने भी भव्य दीक्षा लेते हैं, उन्हें दीक्षा कौन देता है?

उत्तर तीर्थंकर जब दीक्षा लेते हैं, उन के साथ जितने भी भव्य दीक्षा लेते हैं ; वे सभी भक्ति और वैराग्य के हेतु से अनुमोदना स्वरुप, स्वयं ही दीक्षा लेते हैं। अर्थात् वे सभी स्वयं दीक्षित होते हैं। वे किसी अन्य से दीक्षा नहीं लेते हैं।

प्रश्न 15 चक्रवर्ती श्री सगर जी ने श्री सम्मेदशिखर जी स्थित कितनी कूटों की वन्दना की थी?

उत्तर चक्रवर्ती श्री सगर जी सबसे प्रथम संघपति हुये हैं । उन्होंने ही सर्वप्रथम श्री सम्मेद शिखर जी की वन्दना की थी। वे तीर्थंकर श्री अजितनाथ जी के समकालीन हुये, और तीर्थंकर श्री अजितनाथ जी, श्री सम्मेद शिखर जी से सिद्धत्व प्राप्त करने वाले प्रथम तीर्थंकर हुये हैं । इसलिये चक्रवर्ती श्री सगर जी ने केवल एक ही कूट - सिद्धवर कूट - की वन्दना की थी ।

प्रश्न 16 शासनकाल किसे कहते हैं? एक तीर्थंकर का शासन काल कब से कब तक चलता है?वर्तमान में किनका शासन काल प्रवर्तमान है?

उत्तर तीर्थ की उत्पत्ति (तीर्थकाल,शासनकाल) का प्रारम्भ सम्बन्धित तीर्थंकर की प्रथम देशना / दिव्यध्वनि के खिरने से प्रारम्भ होता है और अगले तीर्थंकर की प्रथम देशना के पूर्व तक, उन तीर्थंकर का शासनकाल चलता है। (श्री कषाय पाहुड़ जी / श्री धवला जी के अनुसार) श्री तिल्लोय पण्णत्ति जी के अनुसार : तीर्थकाल का प्रारम्भ प्रभु के दीक्षा लेते ही प्रारम्भ होता है,अर्थात् उनकी दीक्षा तिथि से।

प्रश्न 17 बैल का चिह्न किस कूट पर अंकित है? उस कूट का नाम बतायें?

उत्तर बैल का चिह्न श्री आदिनाथ जी की कूट पर अंकित है। इस कूट पर कोई नाम लिखा नहीं है। [तीर्थंकर श्री आदिनाथ जी, श्री सम्मेदशिखर जी से मोक्ष नहीं सिधारे हैं।]

प्रश्न 18 श्री सम्मेदशिखर जी स्थित कूटों पर जो चरण अंकित हैं, वह स्थान कौन चिह्नांकित करता है?

उत्तर तीर्थंकर प्रभु को जैसे ही मोक्ष होता है, उसी समय सौधर्मेन्द्र अपने अवधि ज्ञान से उनकी निर्वाणोपलब्धि को जान लेते हैं । वे उसी स्थान पर आकर (अन्य क्रियाओं के उपरान्त) उस स्थान को, वज्रदण्ड से, चिह्नांकित कर देते हैं।

प्रश्न 19 प्रत्येक कूटों पर, हम जो अर्घ चढ़ाते हैं, पुस्तक में से देखकर, जितने भी कोड़ाकोड़ी मुनिराज इस कूट से सिद्ध हुये हैं, उनके चरणों में अर्घ्यम् निर्वपामिति स्वाहा । यह संख्या कौन सी है?क्या वे सब उन्हीं तीर्थंकर के साथ ही, उस कूट से मुक्त हुये है?

उत्तर जी नही, ये सब उन तीर्थंकर के साथ सिद्धत्व को प्राप्त नही हुये। यह सङ्ख्या सम्बन्धित तीर्थंकर के शासनकाल में, उस कूट से सिद्धत्व पद को प्राप्त होने वाले मुनिराजों की है।

दीदीजी जय जिनेन्द्र

पहली बारजव मेरी मा शिखर जी टोंक वंदना याद कर रही र्थी, उन्होंने मुझे पूछने को कहा तो मै उनकीयाद की हुई वंदना सुन रहा था, तो मुझे लगा कि यह मुझे भी याद करना चाहिए। फिर वैशाली दीदी ने टोंक वंदना याद करने का सरलतरीका बताया उससे मुझे बहुत कम समय में पूरी वंदना याद हो गई और मुझे बहुत खुशी हुई हर कूट को याद करने का सरलत रीका बताया। इसके लिए मैं दीदी को धन्यवाद देता हूं। मैं रोज शिखर जी की वंदना करके धन्य होता हूं।

अविरल जैन, जबलपुर

श्रीमति वैशाली दीदीजी,

शाश्वत तीर्थ राज सिद्ध क्षेत्र सम्मेद शिखरजी की वंदना करना बड़े ही पुण्य उदय का प्रतिफल होता है। यह शुभ अवसर मुझे बहतु ही छोटी उम्र में प्राप्त हुआ है।

वर्तमान में फैले संक्रमण के कठिन दौर में आपने कूटों के नाम याद कर प्रति दिन ध्यान के माध्यम से स्मरण करसमय का सदुपयोग के साथ सार्थक कराने का शुभ अवसर आपके प्रेरणा से प्राप्त हुआ। यह मेरे लिए अत्यंत ही सुखद एवं सार्थक रहा, क्योंकी भाव पूर्वक कंठस्थ करते समय प्रत्येक कूटों की साक्षात वंदना का अहसास किया। इस अवसर के माध्यम से प्राप्त अहसास ने न केवल सुखद अनुभुति प्राप्त हुई बल्कि आत्म चेतना जागृत करने का भी शुभ अवसर मिला। आप के इस उत्कृष्ठ कार्य की हृदय से अनुमोदना करते हुए कोटिश धन्यवाद प्रेषित करती हूँ।

कु. विदुषी जैन, जबलपुर

वैशाली दीदीजी

आपके द्वारा शाश्वत तीर्थ राज सिद्ध क्षेत्र सम्मेद शिखरजी के कूटों के नाम याद कर प्रतिदिन ध्यान के माध्यम से स्मरण कराने का शुभअवसर आपके प्रेरणा से प्राप्त हुआ, यह मेरे लिए, अत्यंत ही सुखद एवं सार्थक रहा। क्योंकि भावपूर्वक कंठस्त करते समय प्रत्येक कूटों की वंदना का अहसास किया। शाश्वत तीर्थ राज सिद्ध क्षेत्र सम्मेद शिखरजी की वंदना सशरीर करने का सौभाग्य बड़े पुण्य वालों को प्राप्त होता हैष जिन आगम में भाव वंदना का भी उतना ही महत्त्व है, जिस शुभअवसर को प्रदान कराने का पूरा श्रेय आप को जाताहै। आप की यह प्रेरणा हंमेशा प्रेरणा स्त्रो रहेगी जो सदैव मील के पत्थर के रूप में साबित होगी। इसके लिए आपको कोटि-कोटि प्रणाम।

कु. भवि जैन, (13 वर्ष), जबलपुर

जय जिनेन्द्र

ये भाव वंदना करके ऐसा लगा जैसे मैं सक्षात सम्मेद शिखर जी की टोंको की वंदना कर रहा हूँ। मैने इन कूटों को क्रम से कंठस्थ किया ।

भरतेश जैन (उम्र 7 वर्ष),
अलवर (राज)

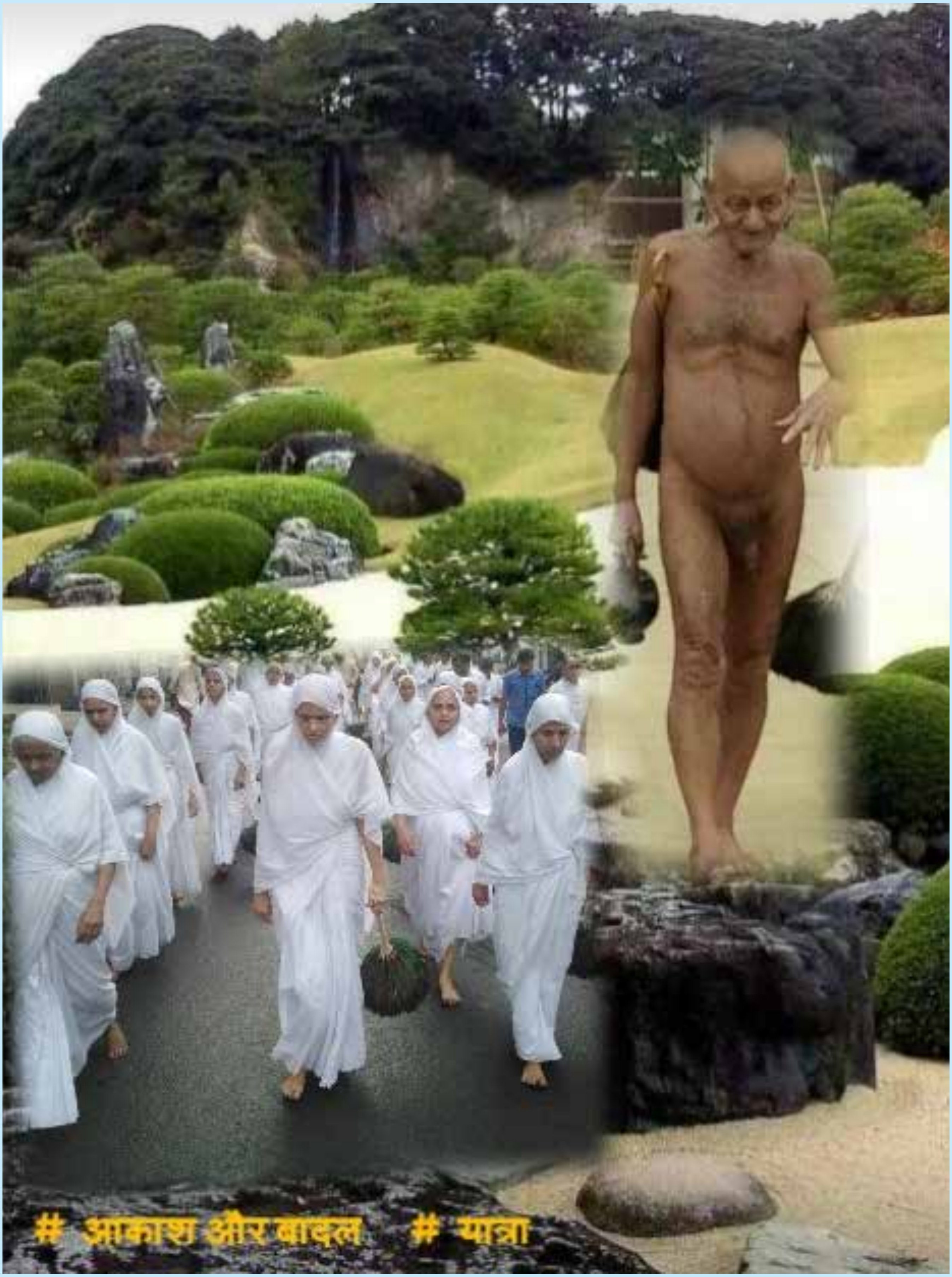
आकाश और बादल # यात्रा

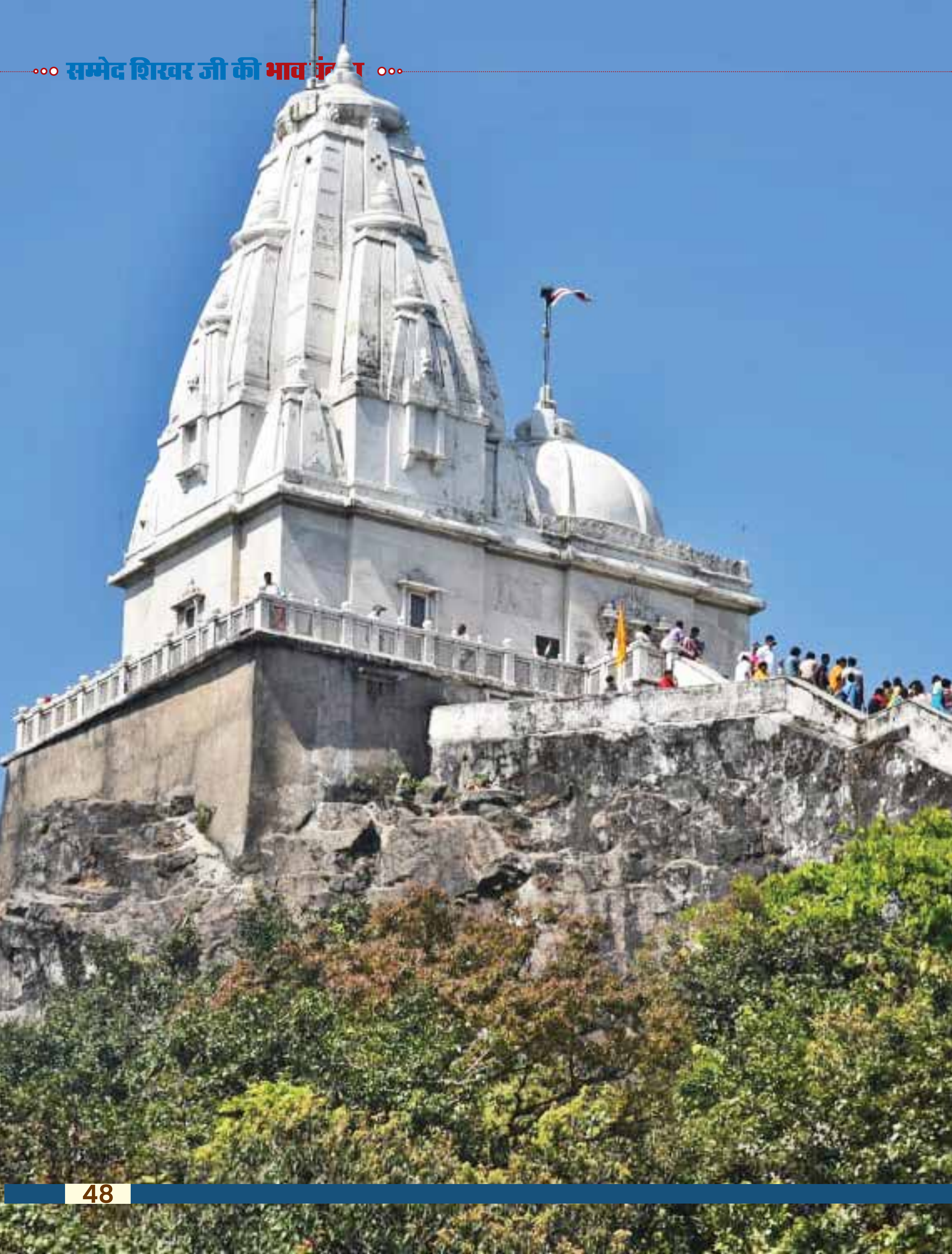

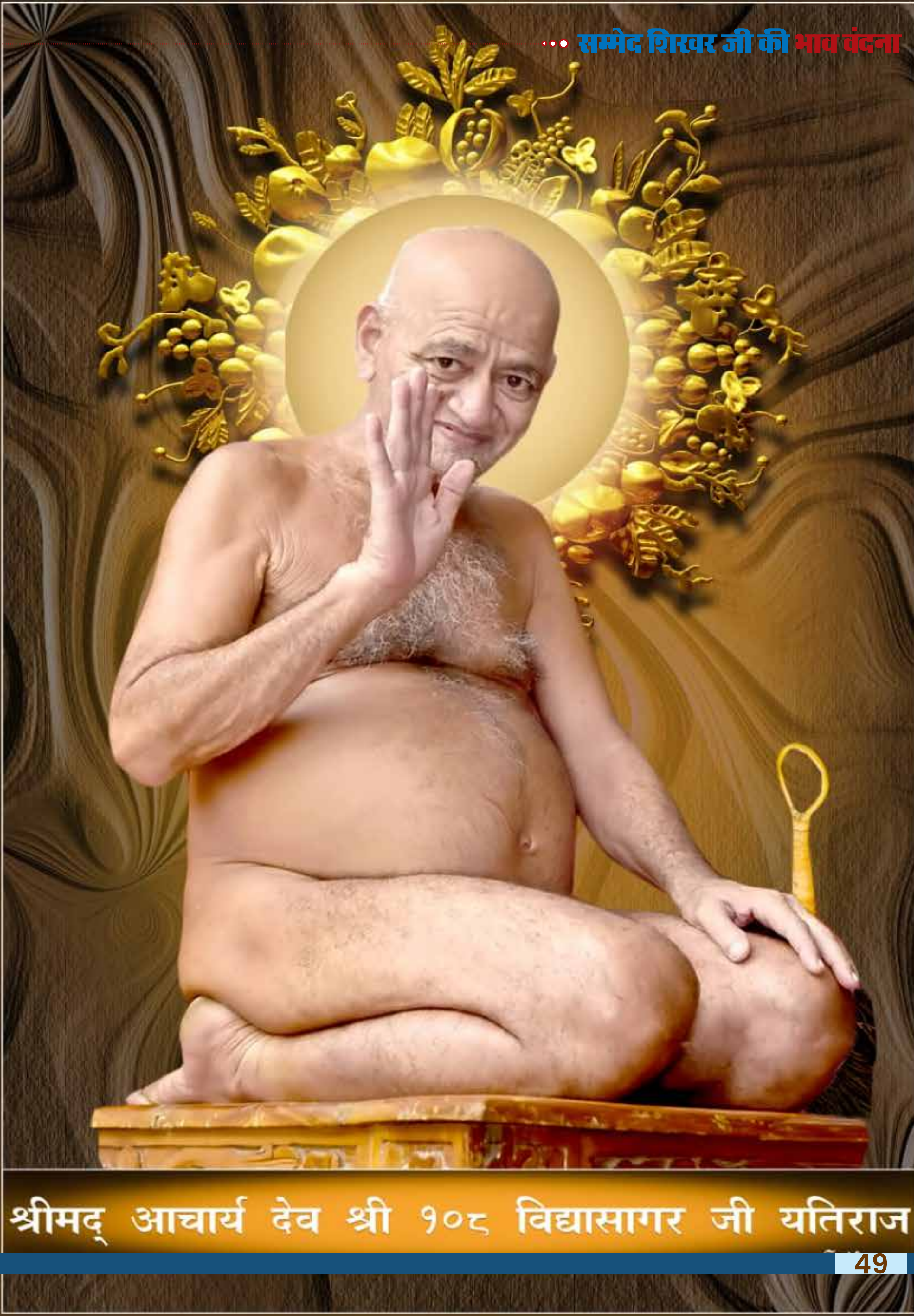
श्रीमद् आचार्य देव श्री १०८ विद्यासागर जी यतिराज

सभी सुधीजन से कर बद्ध निवेदन है कि इस पावन कृति पर मेरे द्वारा लेखन में बहुत सारी त्रुटिया अवश्य होंगी। सभी सुधीजन त्रुटियो पर ध्यान न देकर, मुझ अल्पज्ञ को क्षमा प्रदान करे।

मेरा उद्‌देश्य केवल इसे सरल रुप से समझने के लिये हैं!

हर कूट सिद्धत्व प्राप्त करने वाले मुनिराजो की संख्या व हर कूट की भक्ति पूर्वक वंदना कर, उपवास का फल विभिन्न पुस्तको में विभिन्न संख्या हैं। हमें इन संख्याऔ में न उलझकर, केवल अपनी विशुद्धि पर ध्यान देना हैं। कहने का आशय यही है कि हम जितनी भक्ति पूर्वक वंदना करेंगे, कर्म निर्जरा उतनी अधिक होगी !

श्री गौतम स्वामि की कूट पर अकिंत 35 चरण युगल क्यो हैं????

यह भी कही प्रमाण नही है हमने इसे सरल रुप से समझने व याद करने के लिये लिखे हैं !

इसलिये सभस्त सुधीजन मुझ अल्पज्ञ को

क्षमा प्रदान करें !

- श्री मति पंकज विशाला